पप्पू परिहार
की
नज्में-ग़ज़लें

--- पप्पू परिहार
"बुण्देलखण्डी"

पप्पू परिहार
की
नज्में-ग़ज़लें

--- पप्पू परिहार "बुण्देलखण्डी"

पप्पू परिहार की नज्में-ग़ज़लें

- पप्पू परिहार “बुण्देलखण्डी”

प्रथम संस्करण – 16 नवंबर 2011, बुधवार
द्वितीय संस्करण – 17 फरवरी 2021, बुधवार

ये जगह

ये जगह,
इतनी खुबसूरत न थी,
जितनी तुम्हारे,
आने से हो गई,

तुम्हारी, खूबसूरती,
इस पर, छा गई,
जिससे तुम दिल में,
समा गई,

चाहे मुलाकात,
हो की, ना हो,
पर ख्यालों में,
तुम ही छा गई,
इसी तरह तुम्हे निहारते हुए,
तुम हमें भा गई,

....

क्यूँ इतना

क्यूँ इतना, सताती हो,
सब पर, जुल्म ढाती हो,

खुबसूरत हो, इतनी,
फिर क्यूँ इतना,
सवंकर आती हो,

क्यूँ इतना, लजाती हो,
होश सबके, उड़ाती हो,

मासूम हो, इतनी,
फिर क्यूँ इतना
नजाकत दिखाती हो,

....

जज्बातों से

जज्बातों से, खेला हूँ,
उसके, पता नहीं,
उसका क्या, हाल है ?

भूल चुका हूँ,
उसको, पता नहीं,
फिर भी, दिल क्यों,
बेहाल है ?

कुरेदती हैं, यादें उसकी,
इस तरह,
दिल की चाल को,

समझ नहीं, पाता हूँ,
अपने इस,
दिल के हाल को,

....

तुझे देखकर

तुझे देखकर, दिल की,
धडकन, तेज हो गयी,
निगाहें, तुझ पर,
ठहर सी, गयी,

मत पूँछ, हाल मेरा,
बेसुध पड़ा हूँ, बरामदे में,
मनसूबे, बना रहा हूँ,
तुझसे, मिलने के,

बहाने ढूंड रहा हूँ,
घर से निकलने के,
न कुछ खाया है,
न कुछ पिया है,

पता नहीं,
कुछ अजीब सा,
मज़ा, मिल रहा है,

....

हाय

हाय, मर गए,
मिट गए, तेरी,
इस अदा पर,
फ़िदा हो गए,

सही में, तू कमाल,
करती है,
अपनी, खूबसूरती का,
ख्याल करती है,

तेरी आखों की,
इन मदहोशी में,
खो गए, तेरी,
इस अदा में, अपने,
होश खो गए,

बार-बार, निहारने को,
तुझे, जी चाहता है,
अपनी, आखों से,
दिल में, उतार लेने को,
जी चाहता है,

....

हाल दिल का सुना दिया

हाल दिल का सुना दिया,
तुझे अपना बना लिया,
तुझे पता हो कि न हो,
दिल तुझसे लगा लिया,
उल्फत हुई तुमसे,
मुहब्बत हुई तुमसे,
जीने का अंदाज़ आया तुमसे,
न किया कुछ बिना जाने तुमसे,

....

गुरुरे हुश्न

गुरुरे हुश्न, मैं तुझे
ताकीद न कर पाया,
देखता रहा, तुझे,
तस्लीम न कर पाया,

खता माफ़ हो,
या सजा दे दो,
पर नज़र न हटे तुझसे,
ऐसी जगह दे दो,

मायने जिन्दगी के,
तुमने बदल दिए हैं,
बेपनाह हुश्न जो,
तुमने पाया है,

जिन्दगी कि भी,
अब खबर नहीं,
जबसे तुमको,
इन तस्वीरों में देख पाया है,

....

हाय यह

हाय यह,
तेरा,
नाज़ुक बदन,
आखों की,
सोखियों का,
चमन,

लहराती जुल्फों का दामन,
मदमस्त जावानी की उफन,

रब यह कैसी नजाकत है,
रब यह कैसी हुश्न परि है,
रब यह कैसी तुफ्लिश है,
रब यह कैसी मोहब्बत है,

....

ऐसे तो रोज़ निकल जाती थी

ऐसे तो रोज़ निकल जाती थी,
यूँ न देर लगाती थी,
पर आज पता नहीं,
अभी तक क्यूँ आयी नहीं,

देखता हूँ, जाता हूँ,
पता लगाता हूँ,
क्या बात है,

पहुंचा वहाँ,
क्या देखता हूँ,
अपनी सहेलियों के साथ,
हो रही उसकी बात है,

चिड़ा रहीं हैं उसे,
चुहुल बाज़ी हो रही है,
शायद किसी दावत की बात हो रही है,
उसकी तरफ से भी हाँ हो रही है,

मुझे जो देखा, आँख फेर ली,
सहेली के काम में कुछ कहा,
सहेली ने इशारा में कहा,
कुछ दूर चलने को कहा,

न आना अब इसके पीछे.
ये जा रही किसी और के पीछे,
खैर अगर चाहो,
दूर अब भागो,

अब क्या बचा था,
मुँह मेरा लटका था,
उन्ही बैठ गया,
न उठा गया,

....

गुस्तगुल न हुआ

गुस्तगुल न हुआ,
मजारे प्यार का,
ऐतबार तो लिख दिया,
मेरे यार का,

हूँ फ़ना उसके,
जानिबे दीदार का,
न इज़हार कर यूँ,
अपने प्यार का,

फासिबे मोहब्बत
अब क्यूँ अफसाना हुआ,
नूर-ए-हलक तेरा हुश्न,
अब क्यूँ दीवाना हुआ,

बेवक्ते तेरे दर पे उसका,
यूँ आना क्यूँ हुआ,
हालिबे उसके मजार पे,
यूँ जाना क्यूँ हुआ,

इदरिसे हसन्नुम,
उसका तरन्नुम,
क्या सुना,
वक्त-ए-हाल,

मुनासिब ख्याल,
उसका क्या सुना,
आदिसे हलक का,
उसका हलकान क्या सुना,

सुर-ए-नाज़ुक,
गले की सुरमाई,
उसका क्या सुना,
दरीबे का आईना,

जिन्दगी के तजुर्बे से निखरा,
उसको देखते हुए,
जिन्दगी का तजुर्बा तिलखा,
हंसी आती,

निगाहें चुराती,
जान गयी फलखा,
आबे दयार से निकला,
जब उसका यह तलबा,

....

न हुश्न था

न हुश्न था,
न हुश्न की नुमाइश थी,
आज गलियों में,
बेरुखी सी छाई थी,

उसका दर भी,
आज, बन्द लग रहा था,
उसके मिलने को,
आज, जी कर रहा था,

बस यूँ गुमसुम-सा,
घूम रहा था,
दोस्त न आज कोई,
मिल रहा था,

टहलते-टहलते यूँ ही,
दूर तक निकल गया,
वही पास एक चाय की
दुकान पर बैठ गया,

चुस्कियां चाय की
अब चल रही थीं,
आखें अब भी

उसके दर पर लगी थीं,
बेसब्री-सी यूँ बढ रही थी,
दिल की धड़कन तेज़ हो रही थी,

तभी न जाने कोन निकला,
दिल धक् से यूँ बिकला,
ये क्या कातिल बला थी,
अरे ये तो अपनी ही दिला थी,

किसी की कलाकारी ने
इसे और हसीन कर दिया था,
सुबह-सुबह इसको किसी ने
इतना रंगीन कर दिया था,

बाद में पता चला
चाय की दुकान पर,
आज इसको देखने आने वाले हैं,
घर पर,

दिल बैठ गया,
मैं भी बैठ गया,
मुझको ये क्या सिला दिया,
किसी और की उसे बना दिया,

मैंने ऐसा क्या गुनाह किया,
उठा धीरे-से
चल पड़ा घर की ओर,
पड़ा बिस्तर पर,

कर पीठ उसके घर की ओर,
तभी घंटी बजी,
सामने खड़ी थी सजी,
मुस्करा रही थी,
बुलावा आने का भेजी,

साथ में कुछ सामान ले गयी,
आना ज़रूर जाते-जाते कह गयी,
सब घर जाने की
तैयारी में लग गया,
मैं भी कोई बहाना
ढूढने में लग गया,

अब कैसे जाना होगा,
कैसे मुँह दिखाना होगा,
बस जिन्दगी को भुलाना होगा,
आंसू पीकर शादी में इसकी जाना होगा,

....

खता माफ़ करना

खता माफ़ करना,
यूँ अब रुका जाता नहीं है,
बरबस तेरी तारीफ़ में,
शेर निकल आता है,

क्या करून तू है ऐसी,
तेरी खूबसूरती तेरी शोखी,
तारीफ़ तेरी करून,
ऐसा एक जोश-सा देती तोखी,

तारीफ़ करता हूँ,
तू वफादार है अपने हुनर से,
रोज़ करती है रियाज़,
बिना किसी न नुकर से,

खुसबू बिखेरती हो,
सभी के आँगन में,
सुगंधा नाम है, तुम्हारा,
आवाज़-ए-सुगन्ध
और फुहार-ए-हंसी पर
इख्तियार है, तुम्हारा,

....

हुश्न भी पाया है

हुश्न भी पाया है,
आवाज़ भी पायी है,
अदा भी पायी है,
अदाकारी भी पायी हैं,

सबसे बड़ी बात है की,
जज्बातों की कदर करती हो,
दूसरों के दिल की बात को,
अपने दिल से सुनती हो,

ये नवाजिस खुदा सबको नहीं देता है,
किसी खास को ही यह तोहफा देता है,

तुम पर खुदा की मेहर बनी रहे,
हम पर तुम्हारी नज़र बनी रहे,

....

लगाने को तो दिल लगाना

लगाने को तो दिल लगाना,
बस चन्द घड़ियों की बात है,
पर लगाकर फिर संभालना,
ये जन्मों-जन्मो की बात है,

कारीगरी इसमें
मिट-मिट कर आती है,
किसी को भाति,
किसी को न सुहाती है,

बस इसका इतना तो,
असर पड़ता है,
जिन्दगी को दाव पर लगाना पड़ता है,
लगाते-लगाते फिर ये लग जाता है,

संभलते-संभलते ये संभल जाता है,
लो बता दिया दिल का फ़साना,
सोच कर न दिल लगाना,
यूँ दिल जब करे इनकार,
तो फिर दिल उसी से है लगाना,

....

झूठी मुस्कुराहट का भी

झूठी मुस्कुराहट का भी,
अपना असर है,
लगता है हमको,
कुछ हमारी भी कदर है,

उसकी मुस्कान का,
कुछ मतलब न लगा लेना,
वो परी है जहाज़ की,
दिल न उससे लगा लेना,

सही कहा है,
परियाँ जन्नत में होती हैं,
जन्नत आसमान में होती है,
तो, आसमान के जहाज़ की ये सुंदरियाँ,
क्या परियों से कम होती हैं,

चेहरा मुस्कुराता है,
दिल न लगाती हैं वो,
बस दूर से ही,
इंसान से नज़रें चुराती हैं वो,

खुदा ने हुश्न भी तो आसमान में
लटका दिया है,
इस गरीब को इस हाल में
एक फटका दिया है,

इतनी ख़ूबसूरती,
जमीं पर पैर न धरती है,
नज़रों से लगता है,
किसी और पर मरती है,

कितना बेदर्द नज़ारा था,
हुश्न होते हुए बेदारा था,
बस एक तकल्लुफ था,
हुश्न भी किये किनारा था,

कितना सहती हैं रोज़,
किनके-किनके आखों कि बेहहाई,
गर पूछ लो इनसे,
पता चल जाए सबके नज़र कि सफाई,

शायद ही किसी ने,
नज़रें न मिलाई हों इनसे,
नजर से दिल मिलाने की
आरज़ू की हो इनसे,

इन हसीनों को भी
काम करना पड़ता है,
दूसरों का कितना
ख्याल रखना पड़ता है,

गर वक्त होता, थोडा अभी पीछे,
दीदार न होता, इनका यूँ दरीचे,
होती ये किसी, सूबे की मल्लिका,
न देख पाते यूँ, इनका ये सलीका,

पहरे में रहतीं, हर वक्त किसी के,
न गौर से देख पाते, यूँ जी भर के,
खुदा ने हम पर, मेहरबानी की है,
इनको न यूँ,

किसी की रानी की है,
सहमी सी जिन्दगी का,
चेहरे से झलक आता है,
किसी और के सामने,

चेहरा यूँ जो मुस्कुराता है,
दिल में यूँ कितनी
कसमसाहट होती है तब,
कोई अनजान हसीना,
मुस्कुरा देती है जब,

कई तो आदि हैं इसके,
न देखते हैं उनकी तरफ,
कैसे छिपाए,
दिल का अरमाँ देखें उनकी तरफ,

बड़ा अजीब लगता है,
हलचल सी मच जाती है,
समझ न पड़ता,
दिल में झंकार से बज जाती है,

इस तरह शायद
बहुत किस्से बने होंगे,
इन हसीनाओं के बहुत
दीवाने बने होंगे,

....

वो खड़ी है

वो खड़ी है,
किसी के इंतज़ार में,
कोई तो आने वाला है,
आखें गडी हैं, राह पर,
तक रही हैं, हर राही को,
दिल बेचैन हो रहा है,
अमन चैन खो रहा है,
बार-बार घडी वो देख रही है,
पर वो खड़ी है,
किसी के इंतज़ार में,

वक्त कुछ गुज़र रहा है,
दिल उसका बैठ रहा है,
सोच कुछ न रही है,
मन अटकलों में जा रहा है,
वो होश खो रही है,
जोश वो खो रही है,
पर जज्बा न खो रही है,
वो अभी न रो रही है,
वो अभी तक खड़ी है,
किसी के इंतज़ार में,

....

वजह: फरमाया आपने

वजह: फरमाया आपने,
ये तो न सोचा था ख्वाब में,
गर यूँ ही सेहरे सजते रहे,
बकरे यूँ ही कटते रहे,

कोई न फिर साजदार होगा,
उसका न कोई राजदार होगा,
पर जिन्दगी का एक उसूल है,
करो तो कुबूल है,

सेहरा ही जिन्दगी को सवाँर देता है,
गवाँर को एक प्यार देता है,
किसी को एक दुलार देता है,
उनको एक मुनार देता है,

अभी तो लग रहा है की,
जिन्दगी छूट रही है,
पर जिन्दगी का तजुर्बा देता है,
जिन्दगी को जीने का सलीका देता है,

जिन्दगी को जानने वजीफा देता है,
गर कोई छलांग मारकर,
निकल जाता है सेहरे के फूलों से,
तो वह रह जाता है महरूम,
जिन्दगी के कुछ नजारों से,

तो जिन्दगी में काटकर जाना ही,
बेहतर है,
कम-से-कम फिर तो
वापस लौटना पड़ेगा,
सबकुछ सहकर,

....

आपके तारुफ़ का

आपके तारुफ़ का,
आपकी हौसला अफजाई का,
आपके बड़प्पन का,
तहे दिल से शुक्रिया,
अदा करता हूँ,

आपने इस जहाँ से मेरा तारुफ़ करवाया,
आपने इस जहाँ से मुझे जुड़वाया,
आपने इस जहाँ से मुझे प्यार दिलवाया,
आपका तहे दिल से बहुत-बहुत
शुक्रिया,

....

आपकी नज़र कुछ अर्ज़ किया है

आपकी नज़र कुछ अर्ज़ किया है,
आपने उसे पसंद किया है,

गुस्ताखी माफ़ हो, दिल अपना साफ़ हो,
इस तरह पेश आने की, सजा माफ़ हो,

जवाब आया है आपका,
दिल भर गया है जनाब का,

आपने ये पसंद किया,
दिल उसका रजामंद किया,

सोचा था कहीं खफा तो न हो जायेंगे,
मेरी इस करनी को खता तो न पायेंगे,
पर दिल उनका बड़ा है,
बडप्पन उनका बड़ा है,

खुदा की नवाजिश उनपर हमेशा रहे,
खुदा उनकी हर ख्वाइश हमेशा पूरी करे,

....

कुछ वो राजदार थी

कुछ वो राजदार थी,
कुछ मैं राजदार था,
कुछ न वो कह रही थी,
कुछ न मैं कह रहा था,

कुछ वो चुप हो रही थी,
कुछ मैं चुप हो रहा था,
कुछ वो मुझे देख रही रही थे,
कुछ मैं उसे देख रहा था,

कुछ उसका दिल धड़क रहा था,
कुछ मेरा दिल धड़क रहा था,
राज़ की बात वो कह रही थी,
राज़ की बात मैं कह रहा था,

कुछ न वो सुन रही थी,
कुछ न मैं सुन रहा था,
दिल में दोनों के लहर उठ रही थी,
जिन्दगी कुछ यूँ सवंर रही थी,

....

गम था, बेदर्द जिन्दगी का

गम था, बेदर्द जिन्दगी का फ़साना था,
अब बीत गया, जो अपना जमाना था,

हर दिल आह भरता था,
हर सख्स फ़ना होता था,
हर नज़र राह तकती थी,
हर जान हमपर मरती थी,

वो क्या दिन थे, वो क्या रातें थी,
गुज़र गए दिन, बीत गयी रातें थी,

अपना भी कुछ अफसाना सुनाना था,
ज़माने को कुछ और याद दिलाना था,

ज़माना भूल न सकेगा,
ऐसा मेरा अफसाना था,
क़िस्से सुनाएगा जमाना,
ऐसा मेरा अफसाना था,

हम भी मिसाल बन गए, जिन्दगी में,
हम भी कमाल कर गए, जिन्दगी में,

मोहब्बत का हर काम किया,
गम से जुड़ा हर काम किया,
काम न नाम के लिए किया,
काम बस काम के लिए किया,

अब तो बस तन्हाई है,
जिन्दगी की वफाई है,
अकेलेपन की रुखाई है,
किसी की याद सताई है,

सूने-सूने दिन, सूनी-सूनी रातें,
गुज़रे हुए दिन, गुजरी हुई बातें,

यादों के सहारे, किसी से न बतियाते,
मसरूफ हैं, मशगूल हैं,
दिल ही अपना उसूल है,
उसी के सहारे, उसी से हैं बतियाते,

गम था, बेदर्द जिन्दगी का फ़साना था,
अब बीत गया, जो अपना जमाना था,

....

जब आप किसी के खम्बे होते हैं

जब आप किसी के खम्बे होते हैं,
आपके कंधे किसी को थाम्बे होते हैं,
जब सोच वहां से हटने की आती है,
जब बात अपनी तरक्की की आती है,

कैसे हटे वहां से, किसे रखे वहां पर,
क्या करें ऐसे में, क्या न करें ऐसे में,
सोच कर दिमाग फट जाने को होता है,
दिल बड़ी कशमशाहट में होता है,

बात जब दोस्ती की आती है,
अब कैसे वो निभायी जाती है,
बात अब न समझ में आती है,
दिल-दिमाग दोनों को खाती है,

वक्त अभी ये ऐसा आना था,
मेरी तरक्की का बहाना था,
दोस्त से यूँ दूर न जाना था,
अब कैसा यह फ़साना था,

....

आखिर तुमने किया वही

आखिर तुमने किया वही,
अपना घमंड जिया अभी,
दिखा दी अपनी औकात,
तोड़ दी अपनी सौगात,

तुमने किसी को समझा क्या है,
तुमने दुनिया को जाना क्या है,
बाहर तो निकलो कभी,
गुरुर तो छोड़ना अभी,

एक इज्ज़तदार को बेईज्ज़त किया,
सब किये कराये पर पानी फेर दिया,

तुम क्या समझती हो,
प्यार उसे तुम्हारी दौलत से है,
तुम उस पर मरती हो,
तुम्हे प्यार उसकी सोहलत से है,

....

दानिश की जिन्दगी है

दानिश की जिन्दगी है,
दानिश का फ़साना है,
कुछ दूर तुम्हे जाना है,
कुछ दूर हमें जाना है,

कुछ हम अनजाने हैं,
कुछ रस्ता अनजाना है,
गर साथ मिल जाना है,
रस्ता यह कट जाना है,

दानिश की जिन्दगी है,
दानिश का फ़साना है,
कुछ दूर तुम्हे जाना है,
कुछ दूर हमें जाना है,

यूँ तो कुछ दूर ठिकाना है,
यूँ ही साथ निभाना है,
मंजिल पे तुम्हें जाना है,
मंजिल पे हमें जाना है,

कुछ तुम्हे अपना कहना है,
कुछ हमें अपना सुनाना है,
कुछ वक्त यूँ काट लेना हैं,
कुछ वक्त चुप रह लेना है,

दानिश की जिन्दगी है,
दानिश का फ़साना है,
कुछ दूर तुम्हे जाना है,
कुछ दूर हमें जाना है,

....

उठी आँख

उठी आँख,
नज़ारा देखा,
सामने खुदा का,
तराशा देखा,
थम गयी सांस,
अटक गयी नज़र,
सिहर गया जिस्म,
तन गए रोएँ,
आफ़ताब का पिटारा देखा,
नूर-ए-नज़र का चेहरा देखा,

....

हमसे दोस्त

हमसे दोस्त,
कुछ जुदा हो गए,
कुछ इधर,
कुछ उधर हो गए,
पता नहीं,
कौन कहाँ को गए,
गर जिन्दगी में,
कहीं मिल गए,

फिर वही,
दिल-जान खिल जायेंगे,
फिर वही,
पुराने दिन याद आयेंगे,
फिर वही,
हम अपने को पायेंगे,
फिर वही,
जीने का लुफ्त उठाएंगे,

....

हम से जो बेवफाई कर ली

हम से जो बेवफाई कर ली,
अब न करना किसी और से,
सोच लेना, मिले जो थोड़ी फुरसत,
करना अब सफाई से,

हर कोई यूँ, मजबूर नहीं होता,
जिन्दगी में मशगूल नहीं होता,
वक्त देगा तुझे, तेरे लिए,
तू बन्जा बस उसके लिए,

है फ़साना ये, हर गरीब का,
नहीं नसीब होता, उसे अपना प्यार,
एक तो फुरसत नहीं दुनिया से,
एक दुनिया नहीं उसे करने देती इज़हार,

मौका दे, दस्तूर तो दे,
तू उसे कुछ अपना, सुरूर तो दे,
देख जिन्दगी तेरी सवंर जायेगी,
जब तू उसको मिल जायेगी,

....

हम न जान पाए

हम न जान पाए,
मोहब्बत के फ़साने को,
दीवाना बना गयी वो,
इस बेगाने को,
हम न जान पाए,
मोहब्बत के फ़साने को,

जिन्दगी कट रही,
बात अब तो बन रही,
कुछ ख्याल मेरा भी,
अब तो वो रख रही,
हम न जान पाए,
मोहब्बत के फ़साने को,

....

न समझ की नागवार गुजरी जिन्दगी

न समझ की नागवार गुजरी जिन्दगी,
न कुछ मिला है,
वक्त पर मिल जाता है मकाँ,
बस बात इंतज़ार की है,

नींद न आये, अब क्या करूं,
घूम रही हूँ, टहल रहीं हूँ,
वक्त बस यूँ काट रहीं हूँ,
उस पल का इंतज़ार कर रही हूँ,

न हाथ रख सर पर,
न सोच इतना,
जो हो रहा है,
उस पर भरोसा कर उतना,

....

मोहब्बत तो उससे होती है

मोहब्बत तो उससे होती है,
जिससे नज़रें दो चार होती हैं,
जहन में उतर जाता है वो,
मुलाकातों की शुरुवात होती है,

वक्त थोडा और गुज़र जाने दो,
सवाब में थोडा और रंग आने दो,
अभी क्यूँ हैं, इतनी बेकरारी,
अभी कर लो, थोड़ी और इंतजारी,

कितना इंतज़ार कराया,
कितना बेज़ार कराया,
अब तो कुछ होने दो,
अब तो कुछ खोने दो,

हो गई सगाई, बधाई हो बधाई,
हैं दिल थोडा बेक़रार,
बस शादी का है इंतज़ार,

खुश हुए सब, खुशवार हुआ समाँ,
यह है किस्मत से बंधा हुआ समाँ,

....

तेरे नखरे और नाज़ उठा सकता हूँ

तेरे नखरे और नाज़ उठा सकता हूँ,
तू न माने, तुझे अपनी बना सकता हूँ,

ये जो तेरा गुरुर है,
तेरे हुश्न का नूर है,
इसी में तू अच्छी लगती है,
ऐसी ही तू मुझे कबूल है,

न नाज़ उठा, न नखरे दिखा,
बस पर्दा उठा, तेरा हुश्न दिखा,

गुरुर है हुश्न का,
या फिर तुफ्र है जूनून का,
कभी जिन्दगी में,
मिला नहीं सुकून का,

फितरत है तेरी बदल-बदल कर
आजमाने की,
अब न कर यह गलती, इसे दुबारा
दोहराने की,

खुदा हसीनों को हुश्न देता है,
तो गुरुर क्यूँ देता है,
पल में कुछ होती है,
पल में कुछ और हो जाती है,

हुश्न वालों का किस्सा ये, पुराना है,
खेलती हैं जज्बातों से, ठुकराना है,
हुश्न को गुरुर खुदा से मिला है,
तभी तो सुरूर उसमे दिखा है,

है तो इसके दिल में कुछ और,
जता रही है सबको कुछ और,
बात तो जरुर है कुछ और,
बता राही है कुछ और,

ये लड़कियां बड़ी अजीब होती हैं,
नचाती हैं लड़कों को
उनका नसीब होती हैं,
समझती हैं सब ये,
नासमझ न होती हैं,
बात मन की मनवाना
इनकी आदत होती है,

क्यूँ उसे सताती हो,
क्यूँ उसे रुलाती हो,
क्यूँ उसे जलाती हो,

क्यूँ उसे गुस्सा दिलाती हो,
क्यूँ उसका मजाक उड़ाती हो,
क्यूँ उसकी खिल्ली उड़ाती हो,
प्यार करता है तुमसे,
क्यूँ उसे बार-बार आजमाती हो,

....

मासूम सी जिन्दगी थी

मासूम सी जिन्दगी थी,
मासूम सा परवाना था,
कुछ दूर उसे जाना था,
कुछ दूर मुझे जाना था,
बीच में मुलाकात हुई,
बीच में कुछ बात हुई,
वो राह अपनी चली गई,
मैं राह अपनी चला गया,
बाद में बारात गई,
फिर हमारी सुहागरात हुई,

....

बा खुदा तुझे उसने

बा खुदा तुझे उसने
आवाज़ से जो नवाज़ा,
खूबसूरत भी बनाया,
अंदाज़ से भी नवाज़ा,

सोखी दी, सरगोशी भी दी,
अदा से नवाज़ा,
निगाहों से आबाद किया,
अदब से नवाज़ा,

तुझे हुश्न बक्शा खुदा ने
और नजाकत भी दी है,
तेरी आवाज़ भी खुदा ने
तुझे एक तोहफे में दी है,

ए हुश्न तुझे किस पर नाज़ है,
तेरी आवाज़ भी लाज़वाब है,
बस प्यार की एक नज़र की दरकार है,
तुझे देखने का अरमा बेक़रार है,

आवाज़ सुनी है तेरी, जबसे,
भूल गया आलम को, तबसे,
जहाँ में कहूं मैं ये, किससे,
तभी तो कह रहा हूँ, तुझसे,

आवाज़ की खनक भी पायी है,
बेपनाह हुश्न भी पाया है,
शोखी और अदा भी पायी है,
तुम्हें तो खुदा ने बड़े नाज़ों से बनाया है,

हर तरफ किस्से हैं,
तेरी सोखी के,
तेरी आवाज़ के,
तेरे हुश्न के और तेरी अदा के,
तेरी अदावत के,

जमाना बात करता है,
कि तू सबके दिल का
हाल जान लेती है,
वक्त को तू पहचान लेती है,
तभी तो तू सबको मान देती है,

ऐसी बात सभी में नहीं होती है,
पर बात तेरी अनोखी है,
क्यूँकि खुदा ने तुझको,
खूबसूरती और आवाज़

दोनों एक साथ बक्शी है,
तेरे दीवानों में,
एक मेरा भी नाम लिख ले,
दीवाना हूँ,
दीवानगी का परवाना हूँ,
चाहे तो परख ले,

कभी मुलाकात की तो,
जुस्तजू पूरी होगी नहीं,
हम तो हैं बहुत दूर,
और तू बहुत दूर होगी कहीं,

पर तेरी आवाज़
और तेरी तस्वीर पास है मेरे,
ताउम्र, जिन्दगी गुज़ार लूँगा,
उसी के सहारे,

आवाज़ तेरी,
सब गम भुला देती है,
इस जहां से,
किसी और जहाँ में पंहुचा देती है,

तू गाती रहे,
इसी तरह ये दुआ करता हूँ खुदा से,
तेरी खूबसूरती बनी रहे,
ये दुआ करता हूँ खुदा से,

तेरी सूरत खूबसूरत है,
पर तेरी सीरत उससे भी
ज्यादा खूबसूरत है,
तेरे दिल के साफ़,
आईने में,
सब की दिल की
बात नज़र आती है,

सुन लेता हूँ तेरी आवाज़,
काट लेता हूँ दिन और रात,
दोस्त पूछते, क्या है तेरी,
बेतल्खी के राज़ की बात,

बहुत सुलझी हो और
बहुत समझदार हो,
वक्त को पहचानती हो
और बहुत मददगार हो,

तेरी सोखी का,
तेरी अदा का,
तेरी पैमाइश का,
तेरी मुश्कान का,

तेरी फनकारी का,
दाद देता है जमाना,
तू महकती रहे,
तू चहकती रहे,

तू खुसबू बिखेरती रहे,
तेरी आवाज़ की
मिठास से प्यास बुझाता है
जमाना,

....

वक्त बेजार है

वक्त बेजार है, तेरा इंतज़ार है,
नसीब है मेरा, तुझसे प्यार है,

वफ़ा कर, प्यार कर,
खफा न हो दिल का इज़हार कर,
आरज़ू कर, जुस्तज़ू कर,
खफा न हो दिल का इज़हार कर,

आरजुएं दिल में उभरती हैं,
तन्हाईयाँ रातो को भारती हैं,
सौदायीयाँ प्यार पर मरती हैं,
रोशनायीयाँ जीवन में करती हैं,

हर गम सह हूँ,
हर रंज सह लूँ,
तेरे प्यार की खातिर,
हर जंग लड़ लूँ,

नींद न आये, अब क्या करूं,
घूम रही हूँ, टहल रहीं हूँ,
वक्त बस यूँ काट रहीं हूँ,
उस पल का इंतज़ार कर रही हूँ,
....

वक्त अब आ गया

वक्त अब आ गया,
सुलह तो अब करले,

अब न मिलूंगा इस जहाँ में,
कुछ बोझ तो हल्का करदे,
जा रहां हूँ,
होकर बेजार इस जहाँ से,
कुछ तो मेहरबाँ करदे,

बस कुछ लम्हों की हैं सासें,
बस कुछ पल के हैं पल,
गर याद अगर आ जाएँ,
कुछ भूले-बिसरे हुए पल,

न जाने अब कोन बेदार होगा,
न जाने अब कोन तलब्दार होगा,
अगला मकाँ कोन-सा होगा,
अगला जहाँ कोन-सा होगा,

बर बस जिन्दगी का
आखिरी मक़ाम आ गया,
अब न रुक सकेंगे,
खुदा का पैगाम आ गया,

जा रहा हूँ अब,
सौदाई माफ़ न करना,
मुजरिम हूँ तेरी सजा का,
इसे याद रखना,

आखें खुली रहेंगी, गर तू आयेगी,
तस्वीर उसमें तेरी, उतर आयेगी,

जनाज़े में तू आ सकती नहीं,
अब आजा फिर मिल सकती नहीं,
ज़माने की नज़र तुझ पर पड़ेगी,
पर ये बात किसी को पता न पड़ेगी,

पैगाम तुझे दिल से भेजा है,
मिल गया तुझे जवाब आया है,
अब देर न कर, चली आ बेखबर,
ज़माने से न डर, ले ले मेरी खबर,

आखरी दुआ सलाम तो कर लूँगा,
प्यार का आखरी दीदार कर लूँगा,
मर सकूंगा मैं चैन से,
देख लूँगा जब नैन से,

कितना इंतज़ार कराया,
कितना बेज़ार कराया,
अब तो कुछ होने दो,
अब तो कुछ खोने दो,

बस गुज़र-बसर रही है,
जिन्दगी अपने अंदाज़ में,
बस उथल-पुथल रही है,
जिन्दगी अपने अंदाज़ में,

बस उचल-मचल रही है,
जिन्दगी अपने अंदाज़ में,
बस बहल-सहल रही है ,
जिन्दगी अपने अंदाज़ में,

देख न यूँ हुश्न को,
नज़र का लगा यूँ,
ये हुश्न की बेपर्दादारी है,
देख न उसे यूँ,

चन्द गलियाँ थीं,
चन्द कलियाँ थीं,
फूल थे, भंवरें थे,
चन्द कलियाँ थीं,

आदिब की बेदारी थी,
उस पर क्या खुमारी थी,
खुशगवार वो समाँ,
वक्त जहाँ थमा था,
पल भी न खिसक रहे थे,
लम्हा जहाँ थमा था,

तेरे खड़े होने का अंदाज़,
तेरे मुस्कुरानें का अंदाज़,
तेरे देखने का अंदाज़,
तेरे हाथ पकड़ने का अंदाज़,

तेरे बात करने का अंदाज़,
तेरे चलने का अंदाज़,
गर गौर करके देखो,
तेरे अंदाज़ बदलने का अंदाज़,

दर्द को पी गया,
जिन्दगी को जी गया,
मौत को करीब से देखा,
तुझे को नसीब से देखा,

बस एक ख्वाब था,
तुझसे मिलने का अरमान था,
जिन्दगी का आखिरी लम्हा,

गुजरने के करीब था,
न तू मिली, जमीन पर,
जन्नत में तो मिलेगी,
तब हूर बनकर,
जन्नत में खिलेगी,

होश खोकर जिन्दगी को
अभी संभाला था,
देख़ा जो तुझे,
जिन्दगी को भी रम्भाला था,

पनाह में किसी की अब न जायेंगे,
निगाहों तेरी से एक बार जो गुज़र जायेंगे,

....

मानिन्द सी जिन्दगी है

मानिन्द सी जिन्दगी है,
इक बार तो मिल जा,
जाना है अब जहां से,
इक बार तो मिल जा,

देख लूं तुझे,
तेरा दीदार कर लूं,
तेरी तस्वीर को,
ताज़ा कर लूं,

रुक जाती हैं सांसें,
थम जाती हैं धडकनें,
जब वो लम्हा,
निकलता है फडकने,

....

आपके तारुफ़ का

आपके तारुफ़ का,
आपकी हौसला अफजाई का,
आपके बड़प्पन का,
तहे दिल से शुक्रिया,
अदा करता हूँ,

आपने इस जहाँ से
मेरा तारुफ़ करवाया,
आपने इस जहाँ से
मुझे जुड़वाया,

आपने इस जहाँ से
मुझे प्यार दिलवाया,
आपका तहे दिल से
बहुत-बहुत शुक्रिया,

....

तेरा हुश्न आज बाज़ार में

तेरा हुश्न आज बाज़ार में
बिकने आया,
कोई खरीददार न मिला,
मैं ताकने आया,
किस की नज़र तुझपर पड़ेगी,
देखने आया,
कौन तुझे ले जाएगा,
जानने मैं आया,

अब तो मैं ही तुझे खरीद लेता हूँ,
बना गुलाम हरम में जगह देता हूँ,
कोई और कितनी ही बोली लगाए,
तुझे किसी के पास न जाने देता हूँ,

यह रवायियत, हुश्न की मैंने जो देखी,
उसपर फ़िदा हो, यूँ अपनाने की सूझी,
न यूँ अब शरमा, मेरी ख्वाबोगाह में,
रह अब बेपरदा, मेरी आरामगाह में,

तुख्लिसें तेरी आखें, कितनी गहरी हैं,
मुफ्लिसें तेरी निगाहें, क्या कहती हैं,
ओठों को अब कपकपाने दे, न रोक,
गालों में गुलाबियत आने दे, न रोक,

तुझे पाकर, जिन्दगी भूल गया मैं,
दोस्त-दुश्मन-दुनिया भूल गया मैं,
अब तो तेरे आगोश में, सोता हूँ मैं,
न रोता न जागता, सब खोता हूँ मैं,

दबे पाऊँ वो मेरी मजार पर आये,
सोचा की न पता चलेगा, यूँ आये,
पर मैं अभी सोई नहीं थी, की जाये,
इंतज़ार इनका था, अब तक न आये,

....

दर्द एक दीवाने का

दर्द एक दीवाने का,
दिल को चीर जाता है,
जब कोई दीवाना,
यूँ पास से गुज़र जाता है,

रूह उसकी बता जाती है,
कोई बात कह जाती है,
किसी से पूछते भी नहीं है,
रूह की रूह जान जाती है,

पता नहीं उसकी,
उसे मिलेगी की नहीं,
पता नहीं उसकी,
रूह खिलेगी की नहीं,

बात पलट जाता है वह,
जब कोई टटोलता है उसे,
दिल उलट जाता है वह,
जब कोई मटोलता है उसे,

इस तरह वक्त बीत रहा है,
उसका दिल जीत रहा है,
चेहरे से नूर टपक रहा है,
मोहरा उसका खिल रहा है,

लगता है बात अब बन रही है,
आखें कुछ इशारा कर रही है,
दीवानगी को पार कर उसने,
इख्लायियत को पाया उसने,

....

उस रोज़

उस रोज़
वो यूँ खफा हो गयी,
न जाने फिर,
कहाँ दफा हो गयी,

बहुत ढूँढा,
खूब तलाश किया,
बैठे बिठाये,
क्यों मज़ाक किया,

एक रोज़,
न जाने ऐसा लगा,
वही है,
पास मैं जाने लगा,

हवा चली,
पलके बंद हुई,
सामने से,
वह गायब हुई,

इतनी बेरुखी,
इतना गुस्सा हमपर,
कोई नहीं,
हमें ऐतबार खुदपर,

एक रोज़,
अचानक उसका आना,
यूँ रोना,
लिपटकर चले जाना,

इशारा हुआ,
गए पैगाम लेकर,
निकाह हुआ,
आये उसको लेकर,

....

किस से कहें

किस से कहें, कैसे कहें,
शुक्रिया अदा करते हैं,
ब्लॉग का, दिया उसने,
मौका हमें, अपने दिल के,
गुबार को निकालने का,

न जाने कहाँ-कहाँ भटकते,
किसे-किसे अपना राज़ बताते,
कई तो राज़ का फायदा उठाते,
कई तो हमारा मजाक उड़ाते,

पर अब कोई फ़िक्र नहीं,
यहाँ कोई हमें जानता नहीं,
खुलकर दिल को खोल सकते हैं,
अपना सारा दुःख उड़ेल सकते हैं,

शायद उनकी भी नज़र पड़ जाए,
उनको भी हमारी याद आ जाए,
कुछ अनकहे लफ्ज़ निकल आए,
वो भी हमारी याद में खो जाए,

....

तनहा-सा खड़ा है

तनहा-सा खड़ा है,
कोई न उसका सगा है,
टकटकी है आसमानों में,
ढूंढती है ख्वाबों में,

पसीनें कि बूंदे,
आँखों में,
जर्जर है पिंजर,
बड़ा ग़मज़दा है मंज़र,

ढूंढता है कोई मन्तर,
कर दे सब छू-मन्तर,
आस अभी-भी है बाकी,
टिका ली उसने लाठी,

गहरी है आखों कि गहराई,
डूबने से डरता है, हर कोई,
न पास जाता है कोई,
दूर ही रहना चाहता है हर कोई,

....

उनसे मिलने पर क्या कहेंगे

उनसे मिलने पर क्या कहेंगे,
लफ़्ज़ निकलेंगे, ओंठ कपेंगे,

रात है भीगी-भीगी-सी,
सुबह को तो होने दो,
अब बहुत जाग लिए हैं हम,
थोडा तो अब सोने दो,

तन्हाई में इस तरह से,
कुछ पल तो गुज़र जाने दो,

पलकों में गुज़रती हैं रातें,
अफसानों में दिन हैं गुज़रते,
ऐसे तो बहुत हैं जहाँ में,
रातों को करवटें बदलते,

....

कल उसका फोन आया

कल उसका फोन आया,
बड़े दिनों के बाद आया,
बड़ी दूर रहती है वो,
बड़ी मसरूफ रहती है वो,

मैं करता हूँ तो बहाना बनाती है,
बहुत मसरूफ हूँ ऐसा जताती है,
खुद की बात कहती है,
मेरी बात अनसुनी करती है,

बार-बार हेलो कहती है,
फोन पर फिर बात न करती है,

पर उसके उतने बोल,
कर जाते मीठा घोल,
यादें पुरानी ताज़ा हो जाती,
ऐसा लगता की वो रूबरू है बतियाती,

उसका हुश्न आज भी याद है,
फोटो न कोई मेरे पास है,
कितनी बदल गयी होगी,
पर रूह तो वही होगी,

उसकी बहुत-सी खूबियाँ हैं,
उसके बहुत-से सपने है,
हो जाएँ पूरी उसकी ख्वाईशें,
खुदा-से दुआ की हमने है,

....

इश्क में हारे हुए के

इश्क में हारे हुए के,
चन्द जख्म,
कुरेदते रहते हैं,
न लगाते मरहम,

इश्क में जो हार जाता है,
वही इश्हार लिखता है,
टूटे हुए दिल टुकड़ों को,
आशुओं में डुबोकर लिखता है,

आशिक जब इश्क में हार जाते है,
तब अश्हार लिखते है,
चन्द लफ़्ज़ों को,
अपनी आसुओं की धार में
पिरोकर रखते हैं,

....

कण्ठ इनका सुरीला है

कण्ठ इनका सुरीला है,
मिसरी की डली से गीला है,
माता सरस्वती का आशीर्वाद है इनको,
बड़े बुज़ुर्गों का साथ है इनको,

तालीम इनकी हुई है अच्छी,
मेहनत भी इन्होने की है सच्ची,

किसी रूह की खास पहचान होती है,
दिल साफ़, मीठी ज़ुबान होती है,

इनको तो नाद की सिद्धि हुई है,
नाभि से उठकर, कण्ठ तक वृद्धि हुई है,

....

ग़मों से दूर

ग़मों से दूर,
खुशियों से भरपूर,
मिला एक महबूब,
खुला यूँ नसीब,

देखते-देखते,
नज़र मिलते-मिलते,
शरमाते-शरमाते,
नज़रें चुराते,

ओठों को दबाते,
सहमते-सहमते,
कुछ न कहते,
नज़रें जब हुई चार,

....

तुमसे बिछड़कर

तुमसे बिछड़कर,
जिन्दगी को जीना,
अजीब-सा लगता है,
जिन्दगी का हर कोना,
खाली-खाली सुनसान-सा लगता है,

पता नहीं,
क्यूँ दिन में भी वीरानगी-सी लगती है,
पता नहीं,
क्यूँ रात में भी महफ़िल-सी सजती है,

चन्द शेर निकल आते हैं,
गम से डुबे हुए,
अपने को ही सुना लेते हैं,
तुम में डुबे हुए,

यूँ ही गलियाँ नापते हैं,
यूँ ही सड़कें नापते हैं,
कहीं किसी पुलिया पर,
अपने में ही झांकते हैं,

चेहरा सामने होता है,
दिमाग ठण्डा होता है,
आखें तुम्हें देखती हैं,
पलकें न अब झेपित हैं,

रोज़ का किस्सा यही होता है,
जमाना मुझ पर हँसता है,
मेरा अपना मुझपर रोता है,
क्यूँ जिन्दगी यूँ खोता है,

क्या करें, अब तुझे,
यूँ भुलाया नहीं जाता,
किसी और को तेरी,
जगह लाया नहीं जाता,

अब तो गम छिपा लेते हैं,
ज़माने के काम हम भी आ लेते हैं,
चेहरे से सारे दिन हँसते रहें,
रात को दिल खोलकर रो लेते हैं,

क्यूँ जाहिर करें,
अपने गम जिन्दगी के,
बहाने ढूढते हैं,
ज़माने को खुश करने के,

तुमसे बिछड़कर,
जिन्दगी को जीना,
अजीब-सा लगता है,
जिन्दगी का हर कोना,
खाली-खाली सुनसान-सा लगता है,

....

फलसफा-ए-हुश्न का

फलसफा-ए-हुश्न का,
तेरे अफसाने से शुरू होगा,
तू ख़ूबसूरत इतनी है,
कि जमाना तेरे हुश्न का कायल होगा,

उस पर तेरी सोखी का आलम,
इस कदर समां गया है,
तू महफ़ूज़ रहे,
तेरे भीतर खुदा का नूर आ गया है,

मुर्बते हुश्न, कि तेरे दायरे से,
न निकल पायेंगे,
मर जायेंगे, मिट जायेंगे,
तुझे खुश कर जायेंगे,

खुश है जमाना तेरे दीदार से,
क्यूँ तू छिपा रही है अपने हुश्न को,
दुआयें देंगे तुझको,
ज़माने कि नज़रों से गुजरने दे,
अपने हुश्न को,

छुरियां चल जाती हैं,
सरे बाज़ार तेरे हुश्न कि खातिर,
दोस्तों मैं भी जंग,
छिड जाती है तेरे हुश्न कि खातिर,
तेरे हुश्न पर जवानी इस कदर छाई है,
तू बस मेरे लिए ही,
इस दुनिया में आयी है,

बदस्तूर तेरा यह जुल्म,
हम सह न सके,
अब तो दीदार करा दे,
तेरे बिना हम रह न सके,

तुझे देखे जमाना हो गया,
मस्ताने से तेरा दीवाना हो गया,
पल-पल तेरी याद में,
दर-दर भटकने वाला बेगाना हो गया,

....

वो अकेली चल रही थी

वो अकेली चल रही थी,
कदम जल्दी-जल्दी धर रही थी,
पता नहीं कहाँ जा रही थी,
मुँह और सिर ढक रही थी,

गाडी जो हमारी,
उसके पास से निकली,
थोडा-सा सा वो सकपकाई,
नज़रों में सवाल लेकर,
सर जो यूँ घुमाई,

गाडी हमारी आगे बढ गयी,
वो पीछे रह गयी,
एक अबूझ पहेली कह गयी,
पर उसकी वो अदा,
नज़रों में रह गयी,
निगाहों से बहुत कुछ कह गयी,

....

पीकर आशुओं को

पीकर आशुओं को,
स्वाद पता चला,
जिन्दगी का,

नमकीन सी है,
अपने ही ग़मों,
के आशुओं से,
भरी सी है,

गर गौर फ़रमाया,
किसी को क्या भरमाया,
अपना ही जख्म पाया,
जो रिस-रिस के आया,

....

अँधेरा था

अँधेरा था,
घुप्प अँधेरा था,
कुछ सूझ नहीं रहा था,
कोई पुकार नहीं रहा था,

कदम कैसे उठाऊँ,
क्या पता,
आगे क्या हो,
कदम रखते ही,
कुछ बाला हो,

वहीँ धीरे से बैठ गया,
अँधेरा छटने का इंतज़ार करने लगा,

अँधेरा छटा,
सब कुछ दिखा,
जहाँ में बैठा था,
वही मकाँ सबसे अच्छा दिखा,

....

धीरे-धीरे

धीरे-धीरे,
वो चली आ रही थी,
सड़क पर,
नंगे पाँव,
सलवार हांथों में पकडे थी,

सर पर न छाता था,
न रेन कोट पहने थी,
सफ़ेद लिबास में,
मासूम सी लग रही थी,

हलकी सी बारिश हो रही थी,
पता नहीं कहाँ जा रही थी,
ईधर-उधर उसकी नज़र थी,
शायद ज़माने की आखें पड़ रही थी,

बस ये नजारा देखा,
उसको यूँ गुज़रते देखा,
नंगे पाँव सड़क पर,
एक ख़ूबसूरत हसीना को,
चलते हुए देखा,

....

बात उस दिन की है

बात उस दिन की है,
जब आँख पहली बार मिली थी,
हाँ वो अपनी सहेली के संग थी,
कनखियों से देख रही थी,
आगे को चल रही थी,

फिर उसके बाद
सिलसिला सा शुरू हो गया,
मैं उसके पीछे दीवाना सा हो गया,
रोज़ उसी सड़क पर
आना-जाना हो गया,
अब तो नैनो से नैन बतियाना हो गया,

आखों ने जब पढ़ ली आखों की बोली,
फिर एक दिन वो बोली,
जरा इधर तो आओ,
कोन हो बताओ,

आज में तुम्हारी शिकायत
भाई से करती हूँ,
घूरते हो तुम मुझे,
तुम पर न मरती हूँ,
मेरा तो कोई और है,
तुम से पुरजोर है,

जला रही है, समझ गया,
इम्तिहान का वक्त है,
समझ गया,
उससे कुछ न बोला,
अपना मुंह न खोला,

हंल्का सा मुस्कुरा दिया,
एक तरफ चल दिया,
उसे कुछ वक्त दिया,
आज न कुछ किया,

बस हम निकल लिए,
अपने दिल को थाम लिए,
अब उसकी बैचैनी थी,
रोज़ राह पर नैनी थी,

कुछ दिन निकल गए,
उसके अरमाँ मचल गए,
सही ये वक्त था,
मैं कुछ सख्त था,

उससे अनजान अपनी राह चला,
उसे देखे बिना अनमना चला,
वो अब भी चल रही थी,
अपनी राह छोड़,
मेरी राह पर चल रही थी,

पीछे से उसने, हाथ पकड़ा,
दिया मुझे एक, लफड़ा,
यूँ वो लिपट गयी,
सरे बाज़ार यूँ पट गयी,

....

है साहिल पे बैठा

है साहिल पे बैठा,
लहरों को देखता हूँ,
हवा चलती है,
नमी पानी ले लेता हूँ,

अहसास यह फिजा का,
बहुत देर तक रहता नहीं,
साहिल से जब उठा,
ये भी पास आता नहीं,

अब शुष्क हवा,
चुभती देह में,
झुलसा जाती,
सोख पानी जाती,

कैसे-कैसे दिन बीते,
रात है फिर आती,
सारी-सारी जिन्दगी बीती,
ऋतुएं तो हैं आती-जाती,

....

जैसे-जैसे

जैसे-जैसे साफ़ हुआ मंज़र,
नज़र आयी एक हसीना,
पसीने में तरबतर,

शबाब-ए-हुश्न में डूबी हुयी,
तरासा-ए-खुदा का एक नगीना,

लटें वो सुलझा रही थी,
धूल वो झाड़ रही थी,
बेखबर-सी जल्दी-जल्दी,
अपने को साफ़ कर रही थी,

आस-पास सबकी नज़र,
उस पर थी घूरते लोग थे,
नज़रें गड़ाकर,

उसको अहसास हुआ,
शर्म-शार हुयी,
दबे पाँव धीरे-से,
रुखसत हुयी,

....

बह गया जो पानी

बह गया जो पानी,
वो दरिया में फिर न पाओगे,
जिनको छोड़ा था,
उनको किसी और के साथ पाओगे,

फिर दिल के ज़ज्बात में डूबे,
और कहीं न जागोगे,
देखना हमारी याद के
सहारे जिन्दगी बिताओगे,

खातिर तवज्जो आज
याद ही गयी आखिर,
यूँ हमको ही फिर अपना
बनाओगे आखिर,

किसी और के न बन पाओगे आखिर,
मेरे ही आगोश में आओगे आखिर,

किसने कहा की भुला दिया है तुमको,
यूँ क्यूँ अंदाज़ लगा लिया है तुमने,
अरे अपने दिल से पूछो,
क्या दिल से निकाल दिया है मुझको,
....

यूँ ही बैठे-बैठे

यूँ ही बैठे-बैठे,
एक दिन,
अचानक,
उसका ख्याल आया,

खोता-सा गया,
गोता-सा गया,
रोता-सा गया,
होता-सा गया,

उसकी वो सूरत,
लफ़्ज़ों में,
बयाँ करूँ,

गोल-गोल चेहरा,
मखमली मोहरा,
वो गदराया जिस्म,

उसका किसी से बतियाना,
अपनी तरफ खींच लेना,
बरबस उठकर,
उसका वो चल देना,

कितनी नजाकत से,
भरी थी वह,
चाल से परी,
लग रही थी वह,

उडती-सी चुनर,
उड़ते-से कदम,
धर रही थी वह,

वह चली गयी,
निगाहें भी न मिली,
जानो-जिस्म में,
उतर यूँ गयी,

....

मत पूछ यार

मत पूछ यार,
आज क्या हुआ,

उसकी पड़ती-सी नज़र,
उसकी लगती-सी नज़र,
उसकी घुसती-सी नजर,
उसकी पलटी-सी नज़र,

काफी दिन के बाद,
नज़रें जो मिलीं थीं,
मेरे आने से,
सकपका वो गयी थीं,

काबू में उसका,
दिल-दिमाग न था,
नज़र कहीं तो,
दिमाग कहीं था,

दिल धडकता था,
उसका जोर-जोर से,
साँसें भी वह,
संभालती थी बड़ी मुस्किल से,

कभी-भीतर,
कभी बाहर,
चक्कर काटती थी,
मुझे भी ताकती थी,

पर क्या बताऊँ,
वहाँ भीड़ बहुत थी,
शक भरी निगाहें,
सब ओर थीं,

उसके भी रुतबे का,
ख्याल रखना था,
सरे आम उसको,
न बदनाम करना था,

उसने अपने दिल की,
दिल में रख ली,
मैंने भी अपने दिल की,
दिल में रख ली,

पर निगाहों ने हमारी,
बहुत-सी बातें कर ली,
कुछ उसने मेरी सुन ली,
कुछ मैंने उसकी सुन ली,

सुकून अब मिल गया,
दिल अब खुश हो गया,
आज उनका दीदार हो गया,
ख़त्म इंतज़ार हो गया,

हम तो सोचते थे,
वो यहाँ से चले गए होंगे,
क्या पता इस जिन्दगी में,
दीदार उनके दुबारा कब होंगे,

उनके चेहरे और आँखों से,
ऐसा महसूश हो रहा था,
उन पर भी इस मुलाक़ात से,
दिल-ए-सुकून झलक रहा था,

....

उसने उधर देखा

उसने उधर देखा,
फिर इधर देखा,
सड़क पार कर गयी,
लम्बे-लम्बे क़दमों से,
दूर वो निकल गयी,
पर उसका वो अंदाज़,
आज भी जहन में है,
उसकी वो अदा,
याद आज भी है,

....

यार से ही प्यार हो जाता है

यार से ही प्यार हो जाता है,
प्यासे को पानी ही पियाला जाता है,
पीते-पीते निगाह एक हो जाती है,
पर अब घड़े से कौन चुल्लू में पिलाता है,

कुँए अब ख़त्म हुए,
पनघट पर कौन अब जाता है,
प्यासा तो बेचारा अब भी है,
पर बोतल से पी लेता है,

निगाह न एक हो पाती है,
कोई पनिहारिन न मिल पाती है,
बिचारा आधे प्यार पर रह जाता है,
आधा प्यार न उसे मिल पाता है,
इसलिए प्यार अधुरा रह जाता है,

....

चमकते सितारों की रात में

चमकते सितारों की रात में,
खुले आसमान के नीचे,
बैठा था मैं तन्हा,
सन्नाटा था चरों ओर,
घुप्प अँधेरी रात में,
बैठा था मैं तन्हा,
इतना अकेला,
कि गुफ्तगू करून किससे,
कोई न पास है,
बात करून किससे,
यूँ ही बैठे-बैठे,
इक रौशनी-सी होने लगी,
अब कुछ दिखने-सा लगा,
तन्हाई अब खोने लगी,

....

कुछ उन पर

कुछ उन पर,
कुछ उनके अंदाजों पर,
नजर यूँ चली जाती है,
रोकता हूँ बहुत,
पर नज़र फिसल ही जाती है,

जब नज़र से नज़र मिल जाती है,
तो गज़ब का अहसास दे जाती है,
जहां से महरूम हो जाते हैं,
आलम को अब भूल जाते हैं,

....

फ़क्त उठती-सी नज़र

फ़क्त,
उठती-सी नज़र,
कुछ कह-सा गयी,
उसकी आखों की चमक,
कुछ कह-सा गयी,

दिया मेरे,
दिल को जला,
रोशनी,
अब हो सी गयी,

राह न दिखती थी तब,
अब तो कायनात रोशन हो गयी,
इस रोशन जहाँ में,
अब राहें बहुत हैं,
डर नहीं,
खौफ नहीं,
बाहें बहुत हैं,

वो सामने खड़ी है,
मंद-मंद मुस्कान लिए,
आखें खुली हैं,
तक रहीं मुझे,
कदम उठा,

धीरे से बड़ा,
तेजी से दौड़ा,
ठिठक गया,
अचानक,
कुछ ख्याल आया,
फिर वो जज्बा न बन पाया,

मुड़ा,
कदम वापिस रखे,
उसकी आखों की,
गमगीनी न देख पाया,
प्यार की जगह,
इज्ज़त का ख्याल आया,

कुछ दिन के बाद,
उसके घर,
शादी का पैगाम भिजवाया,
आज उसके साथ,
अपना घर बसाया,

....

कोई न था, बस मेरी आरज़ू थी

कोई न था, बस मेरी आरज़ू थी,
तुझसे हो मुलाकात, तमन्ना थी,
तेरे दिल में मेरे लिए कुछ हुआ,
यूँ दिल तेरा बात करने को हुआ,

न रोकना अब इन जज्बातों को,
बहने देना इन अरमानों को,
दूर है तो क्या बात है,
दिल से दिल जुड़ा, यही बात है,

संग जब दिल धडकता है,
धडकते-धडकते बहुत कुछ कहता है,
हमारे अरमानों को एक करता है,
फिर न कहे भी सब पता चलता है,

यही तो मोहब्बत है, मेरी जान,
मोह में बंध कर चली गयी जान,
न छिपाना अब मुझसे मेरी जान,
जानता तो पहले था, तू ही है मेरी जान,

....

कुछ खिड़की से वो देख रही थी

कुछ खिड़की से वो देख रही थी,
कुछ खिड़की से मैं देख रहा था,
कुछ वो सज सवंर रही थी,
कुछ में चाय पी रहा था,

इतने में उसकी नज़र पड़ी,
झट से हुई वो खड़ी,
न आव देखा न ताव देखा,
खिड़की को फटाक से बंद कर देखा,

मैं मायुश सा हुआ,
हल्की मुस्कान-सा लिए,
बैठ गया वही,
दिल अपना-सा लिए,

कुछ दिन बाद, फिर वही बात हुयी,
खिड़की खुली उसकी, मुलाकात हुयी,
मैंने नज़रें फेर लीं अब,
खिड़की अन्दर मोड़ ली अब,

अब खिड़की मेरी बंद रहती थी,
खुली अब उसकी रोज़ रहती थी,
मैं देखता था, ऊपर के कांच से,
वो झांकती थी, खिड़की की दारंच से,

एक दिन नीचे उतर रहा था,
बहन सामने से आ रही थी,
उसके पीछे वो भी आ रही थी,
थोड़ी आँख मिली,
सर नीच कर रहा था,

शाम का वक्त था,
अब वो रोज़ आने लगी,
बहन से याराना बनाने लगी,
पता नहीं दिल में उसके क्या था,

....

तेरे लट्ठ पन ने

तेरे लट्ठ पन ने तुझे
एक मुकाम दिला दिया,
तुझे सारे ज़माने में
इस कदर चमका दिया,

तेरी अक्ल की दाद देता है
यह जमाना,
चंद्रमुखी चौटाला का भी है
एक फ़साना,

इतनी सफाई से केश को
सोल्व करती हो,
की किसी को भी
भनक नहीं लगने देती हो,

रुसवा नहीं होता कोई,
ऐसा इन्साफ दिलाती हो,
अंदाज़ तुम्हारा निराला है,
सबसे बड़े सलीके से पेश आती हो,

इस तरह तू मुझे न देख,
मुझे तुझसे लगता है डर,
बात सिर्फ इतनी सी नहीं है,
दिल का तो तू है समंदर,

पर तेरी आवाज़ और
तेरे अंदाज़ से मुझे लगता है डर,
इज़हार तो करना चाहता हूँ,
अपने दिल का मन्ज़र,

गुरुरे हुस्न,
मैं तुझे ताकीद न कर पाया,
देखता रहा तुझे,
तस्लीम न कर पाया,

खता माफ़ हो,
या सजा दे दो,
पर नज़र न हटे तुझसे,
ऐसी जगह दे दो,

वाह वाह!
ताबे हयात लग रही हो,
इस लिबास में भी,
नूर-ए-हयात लग रही हो,

....

ये दिल-ए-जज़्बात

ये दिल-ए-जज़्बात की बात थी,
जो कहती थी कर देता था,
इश्क के जज़्बात में बहकर,
तब नदी भी पार कर लेता था,

अब जबसे दिल टूटा है,
बिखर-सा गया है,
न सम्भलता है,
रोज़-रोज़ टुकड़े बीन
यूँ इकट्ठा करता हूँ,
खून निकलता है,

पर अब जज्बा लाना हो तो, नया दिल
चाहिए, पुराना न पिघलता है,
रोज़-रोज़ कितना ही आग में तापों
आसुओं से फिर वो ठण्डा होता है,

....

बाज़ार में चिल्ला-चिल्ला कर

बाज़ार में चिल्ला-चिल्ला कर,
यूँ न बेच अपने जख्मों को,
हिस्सा किसी और का भी है,
तेरे इन नगमों में,

क्या रूह न दुखती होगी उसकी,
जो तुने उसे सरे बाज़ार बेच दिया,
अपने उन पलों का सौदा
जो तुने कर दिया,

गर न होती मोहब्बत,
न यूँ तू शायर बनता,
रह जाता यूँ ही जीता,
रोज़ गम को न पीता,

उसका भी तो कुछ सोच,
जो दिल पर रख पत्थर,
तेरे आसुओं में लाश-सी बनी,
तेरी यादों में बाहों में किसी की डली,

यूँ न गम दे उसे,
न सता यूँ अब उसे,
प्यार किया है उसे,
न ज़माने को बता उसे,

तुझे तेरी शायरी की,
दाद तो मिल जायेगी,
पर जमाना जब जान जाएगा,
वो शर्म-ओ-हया से मर जायेगी,

भले तू तखल्लुस रखता है,
न चेहरा तेरा दीखता है,
न आवाज़ तेरी आती है,
बस तू किताब लिखता है,

पर ये कौन-सा इन्साफ है,
अपनी मोहब्बत को बेचकर,
सरे बाज़ार बदनाम करता है,
और इनाम का हक़दार बनता है,

....

छत पर हम खड़े थे

छत पर हम खड़े थे,
आबो हवा भर रहे थे,
कोहनियाँ टेके हुए,
सहारा दीवार का लिए हुए,

सामने की सीडियों पर,
जल्दी-जल्दी चलता कोई ऊपर आया,
हाथ में कुछ खाने की चीज़ थी,
खाता-खाता ऊपर आया,

हम निहारते रहे,
गौर से देखते रहे,
पहचानने की पुरजोर
कोशिश करते रहे,

न तो यह इस घर में
दिखी थी कभी,
शायद मेहमान बन कर
आयी थी अभी,

उसे भी खुला आसमान
अच्छा लगा रहा था,
उसे मुझे अनदेखा कर देखा था,
नीचे से आवाज़ आयी,

मेरा मन जाने को न था,
धीरे-धीरे ताकते-ताकते,
में नीचे उतरा था,

....

तेरा चेहरा

तेरा चेहरा,
अब कितना बदल गया होगा,
तुझे देखे,
जमाना निकल गया होगा,
पास से भी, अब तू गुज़रे,
पहचान न पायें शायद
तुझे जान न पायें,
पर रूह कहती है,
मैं पहचानती हूँ, रूह उसकी,
तू न फ़िक्र कर,
पर अब उसको रहने दे,
किसी और की रूह की बनकर,

....

शमाँ ने सताया सबको

शमाँ ने सताया सबको,
पास बुलाकर जलाया सबको,
परवानों के जिस्म से,
लौ को अपनी बढाया जबसे,

तभी तो शायद,
ये शमायें इतनी चमकती हैं,
परवानों की रूह से,
इनकी रूह चमकती है,

इतराती हैं, बलखाती हैं,
परवाने गर न जलें,
ये तो कब की,
बुझ जाती हैं,

शुक्र है परवानों का,
उपकार इन पर कर जाते,
इनकी मोहब्बत में,
जिस्म अपना सौंप जाते,

....

बस चन्द दिनों की तो बात है

बस चन्द दिनों की तो बात है,
उनकी हमारी हुई मुलाक़ात है,
मुलाकात की तो बस बात है,
एक दो बार की मुलाकात है,

वो अपने आपे में थे,
हम अपने सहापे में थे,
कुछ बात उनकी तरफ से थी,
कुछ बात हमारी तरफ से थी,

यूँ ही बातों-बातों में,
थोड़ी बहुत मुलाकातों में,
वक्त गुजरता चला गया,
दिल एक होता चला गया,

उनको न रहा गया,
हमको न रहा गया,
अगली मुलाकात में,
मम्मी-पापा को बुला लिया गया,

अनजानों से मिले थे,
बात समझ गए थे,
तय उन्होंने कर दिया,
आपको आमंत्रण दिया,

....

दीवाने को माफ़ कर दें

दीवाने को माफ़ कर दें,
दीवाने से जो खता हो गई,
आपको यूँ खफा कर दिया,
अति दीवाने से हो गई,

यह तो दीवानगी है,
सही पहचाना आपने,
दीवाने की दीवानगी को,
सही आँका आपने,

दीवानों की दिक्कत यही होती है,
दुनिया उनसे बस खफा होती है,
आपने इस दस्तूर को बदल दिया,
आपने दीवाने का दिल रख लिया,

आपकी ज़ुबाँ से अपना जो नाम सुना,
सुकून-ए-दिल मिला हुआ बहुत गुना,

आपकी मसरूफियत को जानते हैं,
आपके दिल को जो पहचानते हैं,
अनगिनत दीवानों को जानते हैं,
शायद उन्हीं में एक हमें मानते हैं,

दीवाने का पता लगाने की जरूरत नहीं,
दीवाना खुद ही हाज़िर हो जाता है वहीं,
दीवाने की मजबूरी है, बहुत बड़ी कहीं,
दीवाने को देख गलत समझ जाएँ कहीं,

दीवाना तो
यूँ आपके सामने आ सकता है,
दीवाने को देख कर धक्का
आपको लग सकता है,

शायद आपको
यूँ यकीन न आ सकता है,
यह आपकी अदाकारी का
दीवाना हो सकता है,

....

दो लफ्ज़ जिन्दगी में

दो लफ्ज़ जिन्दगी में,
यूँ तो बहुत कुछ कर जाते हैं,
पर दो नैन उससे भी ज्यादा,
बहुत कुछ कर जाते हैं,

बोल की क्या ज़रुरत,
जब नैन से नैन लड़ जाते हैं,
इश्क जब हो जाता है,
नैन सब कुछ कह जाते हैं,

बोलियाँ क्या सीखें,
जब अंदाज़ सब बता जाते हैं,
क्यूँ जाया करें वक्त,
जब बिन बोलियाँ सता जाते हैं,

वो दो नैनो का मिलन,
कितना सुकून दे कर जाते हैं,
नैन जब मिल जाते हैं,
सुकून फिर सब छिन जाते हैं,

....

कहते हुए वो शर्मा जाता है

कहते हुए वो शर्मा जाता है,
कुछ कहने के लिए पास आता है,
पर वो दूर चला जाता है,
जाने क्यूँ ऐसा कर जाता है,

हर हाल में सुनना चाहती हूँ,
पर वो कह नहीं पाता है,
उसके ओंठ फडफडाते तो हैं,
पर कुछ कह नहीं पाते हैं,

दूर गर इस तरह वो जाता ही रहा,
कहते-कहते रुक जाता ही रहा,
तो क्या उसका ऐतबार करूंगी,
उससे इस तरह कैसे प्यार करूंगी,

उसे तो कुछ कहना होगा,
शर्म या डर को सहना होगा,
पास तो मेरे आना होगा,
नहीं तो फिर पछताना होगा,

....

जानती थीं आखें

जानती थीं आखें,
तेरे हाल-ए-दिल को,
पर ओंठ कह न सके,
कोशिश बहुत की तुझसे मिलने को,
पर कदम उठ न सके,

जंजीर तो न थी पाँव में,
डाली हमको,
पर पाँव बंधे से लगे,
ज़ज्बात-ए-दिल ने,
बहकाया हमको,
पर हम बहक न सके,

हकीकत-ए-जिन्दगी ने,
किया रूबरू हमको,
हालात-ए-दिल कह न सके,
बात समझ आई,
इज्ज़त-ए-खानदान हमको,
नादान-ए-दिल दे न सके,

मोहब्बत-ए-आस,
न दे सकूंगी तुझको,
वक्त जाया न कर सके,
कहीं और निगाह
ये डालनी अब तुझको,
मुझसे अच्छी मिल सके,

....

वो कुछ न कह रहे थे

वो कुछ न कह रहे थे,
होंठ उनके चुप लग रहे थे,
वो बस देख रहे थे,
कसक-सी पैदा कर रहे थे,

उनको कैसे अहसास हुआ,
मेरे दिल दिल में खास हुआ,
देख वो हमें रहे थे,
निगाह न हम उनसे फेर रहे थे,

ये निगाह-निगाह मिलाने का सिलसिला,
क्या सितम ढाता है,
जब निगाह मिले किसी से तो समझ में,
आता है,

अब वो पास आ रहे थे,
हम ठिठके जा रहे थे,
होश भी नहीं हमको,
उनमें समाते जा रहे थे,

....

वो नज़रें चुरा रहे हैं

वो नज़रें चुरा रहे हैं,
दूर ही दूर से,

वो निगाह न मिला रहे हैं,
दूर ही दूर से,

कैसे उनसे निगाह मिलाएं,
दूर ही दूर से,

कैसे उनके दिल में उतर जाएँ,
दूर ही दूर से,

वो नज़रें चुरा ....

पास जाने की जहमत जो हमने की,
दूरी और उन्होंने हमसे है अपनी की,

क्या कहें उनकी कशिश को,
दूर ही दूर से,

खिंच रहें हैं उनकी और,
दूर ही दूर से,

वो चले आ रहे हैं ईधर,
दूर ही दूर से,

नज़रें वो मिला रहें हैं,
दूर ही दूर से,

वो नज़रें चुरा ....

....

खफा ओ हमसे हो गए

खफा ओ हमसे हो गए,
नाराज़ भी हैं हमसे,
खता बस इतनी है की,
तारीफ़ उनकी है की,

खुश उन्हें कैसे करें,
सोच रहें हैं यही,
खता की सजा कबूल है,
बात है सही,

हमको अंदेशा था,
इस बात का, नाराज़ ओ हो जायेंगे,
खुश होने के साथ-साथ,
दीवाना हमको समझ जायेंगे,

गर दीवाने दिमाग से चलते,
तो दीवाने कैसे होते,
दीवानगी के किस्से,
दुनिया में मशहूर ही न होते,

खता दीवानों की,
नज़र अन्दाज़ की जाती है,
उनकी दीवानगी,
नज़र किसी को न आती है,

हँसते हैं सब,
दुनिया में दीवानों की बातों पर,
सजते हैं सब,
मुशायरे दीवानों की बातों पर,

खुश हों आप,
पुल-ए-तारीफ़ बाँधे,
खफा यूँ हुए,
हमारे ही हैं हाँथ बाँधे,

हमें अपनी दीवानगी से है मतलब,
खुश आपको कर जायेंगे,
औकात जानते हैं अपनी,
आपके पास तक न फटक पायेंगे,

आपको देखकर चन्द जुमले यूँ ही
निकल आते हैं,
दिल का बोझ इस तरह आपके पास
उतार आते हैं,

बात और कुछ नहीं है,
आपसे वफ़ा नहीं हैं,
हमारी दिल-ए-दिलबर और हैं,
वफ़ा उससे पूरी है,
आपकी अदाकारी-ए-अदावत से
सीख ली पूरी है,

जिन्दगी के बहुत से झमेलों को आप
जिस अदा से झेल जाती हैं,
आपकी यही अदा हमको भाती है,
सीख दुनिया की मिल जाती है,

गर आपको नाराजगी है इतनी,
तारीफ़ यूँ न करेंगे,
दिल-ही-दिल में रखेंगे,
और बस किसी से न कहेंगे,

बस नाराजगी आप दूर करो,
हमारा बोझ दूर करो,
हम यह नहीं चाहते की,
आप हमसे यूँ नाराज़ रहो,

खता की सजा दो की,
माफ़ी, है आपके ऊपर छोड़ा,
पर गुज़ारिश एक आपसे,
हमारे बीच न आये रोड़ा,

अब लेता हूँ विदा,
कहता हूँ अब अलविदा,
रोज़ आपको देखूँगा,
सीख तो आपसे लूँगा,

गुस्ताखी कर यूँ परेशान,
न करूंगा,
दिल की बात,
दिल में ही रख लूँगा,

कागज़ पर कलम से लिख लूँगा,
ब्लॉग पर यूँ कमेन्ट न लिखूंगा,

....

दूर वो जिन्दगी से अब

दूर वो जिन्दगी से अब,
धीरे-धीरे जाने लगे हैं,
उनकी चाल से महसूश किया,
किसी की अपनाने लगे हैं,

हमने भी उन्हें छोड़ दिया,
आज़ादी दे दी,
तब से लेकर तब तक,
जिन्दगी उनके बिना ही जी ली,

वर्षो बाद दिखे थे,
एक हसीना के साथ,
घूम रहे थे दोनों,
डाले हाथों में हाथ,

हम उनके सामने न आए,
वो हमको न देख पाए,
दूर से ही नज़र रखी,
अपनी ही सहेली दिखी,

....

हम आके

हम आके,
उन्हें निगाह बस्त कर बैठे
ओ आके
हमसे निगाह एक कर बैठे,

वो अहसास निगाह से
निगाह मिलने का,
कुछ हम ले बैठे,
कुछ वो ले बैठे,

उस लम्हे को हम
आज तक संभल बैठे,
बार-बार याद कर बैठे,
बार-बार अहसास कर बैठे,

जब भी वो हमसे रूठे,
जब भी हम तन्हा बैठे,
पल वो निगाह में
ला बैठे,

....

आपका अंदाज़-ए-उर्दू भा गया

आपका अंदाज़-ए-उर्दू भा गया,
आपकी अदा से अदावत पा गया,
वाह-वाह क्या बात है,
आपकी ज़ुबाँ-ए-उर्दू लाजवाब है,

वो नाज़ुक अंदाज़,
आपका आज हटकर था,
वो अदाकारी का अंदाज़,
आज आपका नायाब था,

वो लफ़्ज़ों को बोलने का अंदाज़,
हमें बहुत कुछ सिखा गया आज,
आज का आपका नजरिया-ए-नाज़,
आपकी नजाकत दिखा गया आज,

नाज़ुक-ए-हुश्न की हसीना
आप फब रही हैं,
आज आप इस लिबास में
हसीन लग रही हैं,

आज आपके इस अंदाज़ के
हर कोई दीवाने हुए,
आपकी अदाकारी के
किस्से गली-गली सुनाने हुए,

....

कुछ निगाहें उनकी

कुछ निगाहें उनकी,
दूरी-दूरी बना रही थी,
पास आने से, कतार रहीं थीं,

दूर से निगाह भी,
न मिला रहीं थीं,
दूर-दूर ही वो, चली जा रही थीं,

सोचो, मंज़र-ए-हकीक,
क्या गुजरी होगी,
मेरे दिल पर,

जो रोज़ आगोश में, मचलती थीं,
आज दूर से ही,
निकलना चाहती थीं,

जाते हैं, वजह को,
तलाशते हैं,
क्यूँ दूर-दूर, ये, मुगालते हैं,

....

दूर अक्नायितों से

दूर अक्नायितों से,
आवाज़-सी आती है,
कोई निगाह, बार-बार,
देख-सी जाती है,

मन ही मन में,
सोचता हूँ, यह हूर कौन हैं,
जो तक-सी जाती है,
क्यूँ मुझे, देख जाती है,
देखकर, अनदेखा, कर जाती है,

रोज़-रोज़, इसी तरह,
छत पर, चली आती है,
बैठा हूँ, अपनी किताबें लेकर,
अब कोई, बहाना लेकर,

सोच उसी के, बारे में, रहा हूँ,
समझ न, पा रहा हूँ,
रोज़-रोज़, मैं भी, छत पर,
चला आता हूँ,

इक रोज़, वो न आयी,
बड़ी देर, नज़र बैठाई,
सीडियों पर, आवाज़ आयी,
झट से निगाह, किताब में, गड़ाई,

बहिन है, मेरी आयी,
साथ उसके, वो भी आयी,
मेरी तो हवा, निकल आयी,
क्या शिकायत, लेकर आयी,

फिर कभी वो, छत पे न आयी,
आज तक है, आस लगाई,
बात बाद में, पता चलाई,
उसकी तो, हो गयी सगाई,

यहाँ तो बस, घूमने है आयी,
वो हो गयी, अब परायी,

हाय वो लम्हा,
कभी-कभी जिन्दगी भर सताता है,
जब सामने से मोहब्बत आती है,
पर इश्क इतराता है,
हिम्मत गर उस वक्त कर जाता,
उसे इस वक्त अपने पास पाता,

....

उसने

उसने, ये जिन्दगी,
हंसकर, गुज़ार दी,
अहसास तक, न होने दिया,
रोकर, गुज़ार दी,

तन्हाई में, अपनी, किसी को,
न शामिल किया,
भरी भरकम, जिन्दगी को,
अकेले ही, उसने जिया,

मिलता था, ख़ुशी से,
गले लगकर, सभी से,
खिलता था, चेहरा,
खिली-खिली, हंसी से,

दिल के, आंसुओं को,
आँखों की, नमी, न बनने दिया,
उन्ही से, सींचकर,
नूर, अपना, है बनने दिया,

....

वो नज़र

वो नज़र, किस तरह, मुझे,
पढ़ने की, कोशिश, कर रही है,
वो नज़र, किस तरह, अपने को,
छुपाने की, कोशिश, कर रही है,

मुस्कान-ओ-हैदर से,
चेहरा, खिल, उठा है,
उसे देखकर, मेरा दिल,
मचल, उठा है,

ये सवारीं, जुल्फें,
ये तक्बीरियत, बैठने की,
सफा-ए-हुश्न से, मत पूछो,
वज़ह, रूठने की,

फ़नक-ए-रूह, अब,
सामने, आई है,
अनक-ए-रूह, तब,
हमने, मिलाईं हैं,

....

माजरा ये मोहब्बत

माजरा ये मोहब्बत,
यारों, समझ से समझ आता है,
जब होती है मोहब्बत
तब माज़रा ये समझ आता है,

बिन मोहब्बत किये,
कईओं ने दीवाना समझा,
कितनों ने ताने दिए,
कईओं ने बेगाना समझा,

पर वो मोहब्बत की
गहराई जानता है, यारो,
उसने मोहब्बत निभायी है, यारो,

उसके किस्से मशहूर हुए ज़माने में,
हूर जो मिली उसे अनजाने में,

तन्हा होकर वक्त जो
उसने बिताया,
इश्क ने एक दिन उसे
नूर-ए-खुदा दिलाया,

....

उनकी उलझनों से

उनकी उलझनों से,
कुछ सुलझनों को,
सुलझा-सुलझा कर,
उलझा-उलझा दिया,

सोच लिया,
समझ लिया,
जान लिया,
पहचान लिया,

उनकी उलझनों में,
खुद को उलझा लिया,
उलझनों को,
सुलझा दिया,

....

खो-सी गयी ख्यालों में

खो-सी गयी ख्यालों में,
डूब-सी गयी अंधेरों में,
चलती-सी गयी घड़ियों में,
सोती-सी गयी ख्वाबों में,

वक्त कटता-सा गया,
हाथ रखता-सा गया,
अहसास होता-सा गया,
कोई जगाता-सा गया,

चौंक गयी, उठ गयी,
ज़ज्बातों को, संभाल गयी,

चेहरा न, पड़ने दिया,
हाथ उसका, पकड़ लिया,
सहेली थी, रूम मेट मेरी,
चेहरे पर थी, मुस्कान मेरी,

....

चले आये हैं

चले आये हैं, ख्वाबों में,
बिना दरवाज़ा, खटखटाए,

बैठते हैं, देखते हैं,
बतियाते हैं, सुलाते हैं,

सो जाते हैं, जगाते हैं,
बिना बताये, चले जाते हैं,

रोज़ यही होता है,
दिल उन बिन न सोता है,
रात भी न कटती है,
दिनभर भी न जगती है,
अलसाई-सी रहती है,

चले आये हैं ....

प्यार उन्हीं से होता है,
उनके आगोश में खोता है,
अच्छी नींद से सोता है,
ख्वाबों में उसे देखता है,

....

तन्हाईओं में उसे

तन्हाईओं में उसे,
पुकारता चला,
दिल ही दिल में,
यादारता चला,

ईधर से उधर,
टहलता चला,
मन ही मन,
मचलता चला,

तन्हाईओं में ....

टकराया न किसी से,
अपने आप को,
जिन्दगी में,
संभालता चला,

खोया है तुमको जब से,
अपने आप को,
जिन्दगी में,
रम्भालता चला,

....

वो

वो पास से गुज़र जाते हैं,
नज़र न ऊपर उठाते हैं,
उनके आने का अहसास,
हम भांप जाते है,

औरों से बतियाते हैं,
हँसते हैं हँसाते हैं,
एक नज़र हमारी तरफ,
न फेरते हैं न फिरयाते हैं,

रोज़-रोज़ आते हैं,
रोज़-रोज़ चले जाते हैं,
हम देखते ही रह जाते हैं,
पास भी न फटक पाते हैं,

पर एक अहसान वो कर जाते हैं,
चेहरा अपना हर रोज़ दिखा जाते हैं,
दिया दिल का जला जाते हैं,
रोशन निगाह कर जाते हैं,

आस एक जगा जाते हैं,
जाते-जाते कुछ ऐसा कर जाते हैं,
....

उलझन-सी है

उलझन-सी है,
कशमकश-सी है,
ठहराई-सी है,
गहराई-सी है,

कदम क्या उठाऊं,
रूक जाऊं, चली जाऊं,
बैठे-बैठे समझ न पाऊं,
किस पर ऐतबार कर जाऊं,

ज़माना बड़ा है,
अपना न कोई खड़ा है,
जिधर नज़र पड़ी है,
घूरती नज़र गडी है,

अहसान अब न ले सकूं,
बोझ उसका न सह सकूं,
अह्सानदार बड़ा होता है,
हर जगह खड़ा होता है,

उलझन-सी ....

....

अहसास

अहसास उनकी आँखें,
दिला रही हैं की,
वो किसी और को,
चाहते हैं,

दिल में एक डर-सा,
बैठा रहीं हैं की
वो हमसे दूर होना,
चाहते हैं,

इस कशमकश की,
जिन्दगी से बाहर कैसे,
निकलूँ मैं कैसे उनको,
किसी और के लिए छोड़ू मैं,

दिल सख्त करूँ या,
बिना बताये ही चली जाऊं,
उनको अब किसी और,
के लिए छोड़ जाऊं,
कुर्बानी अपने दिल की दे जाऊं,

....

उसे न हँसता हुआ देखा

उसे न हँसता हुआ देखा,
उसे बस उदास-सा देखा,
चेहरे की रोनक खो-सी गयी है,
कोई हूर-सी दिल तोड़ गयी है,

तन्हाई को उसने अपना लिया है,
रोशनाई को उसने छोड़ दिया है,
अब हर नज़र उसे जला-सी जाती है,
अब हर निगाह उसे रुला-सी जाती है,

नज़रें मिलाने से डरने लगा है,
किसी पर न अब मरने लगा है,
दूर-दूर हसीनाओं से रहने लगा है,
करीब न किसी को सहने लगा है,

आज चेहरा खिला था उसका,
महबूब नया मिला था उसका,
तभी फोन सहेली का आया,
आज न आ सकूंगी बताया,

उसने कल का फ़साना दिखाया,
फोन पर उसका फोटो दिखाया,
जिससे कल मिल कर है आई,
राज़ उसके खिले चेहरे का पाई,

यहाँ दिलों के खेल में,
बातें ऐसी बेसुमार होती हैं,
जिन पर हो निगाह,
वही अपने खास की होती हैं,

....

ओ

ओ उतरता-सा गया,
दिल में समाता-सा गया,
रोक न सकी अपने को,
टोक न सकी सपने को,

ख्वाबों की दुनिया में,
खोने-सी लगी,
मन-ही-मन उसे,
अपनाने-सी लगी,

बात उससे न अभी हुयी थी,
नज़र न अभी दो-चार हुयी थी,
जाता देखा था उसे राह पर,
दूर-से निगाह कर,

उसकी वो चाल कह गयी,
उसका हाल,
खोई-खोई-सी हो गयी,
कुलबुलाहट-सी हो गयी,

नीचे जा रही हूँ,
कदम उठते नहीं,
ओ कब मिलेगा,
जान सकते नहीं,

पानी लाना मेहमान आयें हैं,
पापा के पुराने दोस्त आयें हैं,
बहुत दिनों बाद तेरे पापा से,
मिलने है आयें हैं,

पानी लाई नज़र उठाई,
वहाँ उसे बैठा पाई,
सहम-सी गयी, सकपका-सी गयी,
जल्दी-से ट्रे रख लौट-सी गयी,

माँ ने तभी और बताया,
उनका सुपुत्र है साथ आया,
याद दिलाने पुराना वादा आया,
तेरे लिया है रिश्ता लाया,

....

अब वो मेरी जिन्दगी में

अब वो मेरी जिन्दगी में,
दुबारा आना चाहते हैं,
पर बात यह है कि,
मैंने दर बंद कर दिए हैं,

कैसे उनको बताऊँ,
दिल पर क्या बीती,
उनसे अल्हदा होकर,
जिन्दगी की जंग जीती,

अब वक्त मिला उन्हें,
मेरी तरफ-तारुफ़ होने का,
जब सारी जिन्दगी बीती गयी,
तब ख्याल आया साथ निभाने का,

अब किसी और की हो चुकी,
तुमसे अब बात बहुत हो चुकी,
अपना वक्त बहुत बेजाया कर चुकी,
तुमसे नज़र अब दूर हो चुकी,

....

वो हमसाया बनकर

वो हमसाया बनकर मेरे करीब आया,
करीब आकर मेरा मन बहलाया,
मन बहलाकर मुझे हंसाया,
मुझे हंसाकार उसने पटाया,

मुझे पटाकर सपना दिखया,
सपना दिखाकर दिल लगाया,
दिल लगाकर अपना बनाया,
अपना बनाकर दूर लाया,

दूर लाकर छोड़ आया,
फिर छोड़कर लेने न आया,
न आकर किस-किस की बनवाया,
रोज़ बनवाकर न जाने कितना रुलाया,

....

वो गहरी सांस

वो गहरी सांस,
जिन्दगी में उतर गयी,
वो बन्द आँख,
वो अपने में उतर गयी,

कुछ बात है आप में,तभी तो वो अपने
आप को भूल जाते हैं,
ऊपर से गुस्सा जताते हैं,
पर अन्दर-ही-अन्दर आप में खो जाते हैं,

रोना आ गया,
जिन्दगी की इतनी-सी उनफ़त से,
अब तो रोज़ ही,
मुलाकात होगी इसी तरह उनसे,

किसका गुस्सा,
किस पर प्यार बन कर उतरा है,
खुद खुश होने के लिए,
किसी और को खुश करने उतरा है,

....

तब समझ पाया

तब समझ पाया,
तेरी सोखी, तेरी अदा का राज़,
जब जान पाया,
ईरानी हसीना के हुश्न का राज़,

सही में कहने वाले ने सही जाँचा है,
आंकने वाले ने सही आँका है,
हुश्न तो ईरान का ही,
इस दुनिया में सबसे बाँका है,

आरजू पूरी हुयी ईरानी हुश्न को
देखने की,
आज तुझे जो देखा,
हुश्न की देख, देह से नहीं,
रूह से देखने की,
आज तेरी रूह को देखा,

अब पता चला तेरे राज़-ए-हुश्न-का,
हुश्न मशहूर है, दुनिया में ईरान का,

....

जबसे तुझे देखता आ रहा हूँ

जबसे तुझे देखता आ रहा हूँ,
कशिश में खिंचता आ रहा हूँ,
तुझ में एक खिचाव-सा है,
जो किसी और पड़ाव का है,

बहुत सोचा, बहुत ढूँढा,
वजह तक न पहुँचा,
तब कहीं से है जाना,
तू तो है इरानी हसीना,

सुना था किसी से,
इरानी हुश्न का दुनिया में जोर है,
ईरान जैसा हुश्न,
दुनिया में कहीं न और है,

हुश्न के मामले में,
आज भी ईरान ही अव्वल है,
ईरानी हुश्न का,
आज भी दुनिया में बल है,

....

प्यार अब आपको हुआ है

प्यार अब आपको हुआ है,
दिल आपका उसने छुआ है,
महसूश आपको यूँ हुआ है,
उसे भी कुछ-कुछ हुआ है,

दोनों-के-दोनों उसे छुपा रहे हो,
प्यार जमाने को न बता रहे हो,
पर बहुत पुरानी है एक बात हो,
इश्क-मुश्क छिपाए न छिपते हो,

छुपाने की कोशिश लाख करो,
भले अभी उसे ज़ाहिर न करो,
भांप सब लेते हैं, समझा करो,
भले ही दिल ही दिल में करो,

गली उन्होंने भी यही पार की,
प्यार किया, फिर शादी भी की,
नज़रों से नज़रों के मिलन की,
ये कहानी है सब के जीवन की,

....

क्या बात हैं जनाब

क्या बात हैं जनाब,
ये क्या से क्या हो गया,
वक्त के साथ-साथ,
बहुत कुछ बदल गया,

याद है आपको,
कहा था कभी,
लड़का-लड़की,
दोस्ती न कभी,

आज दोस्ती कैसे,
तब किसी ने की,
आज खुद ने की,
मन बदला कैसे,

अब रिश्ते की बात,
दोस्ती भी है दोस्त के साथ,
महसूश की ये बात,
मैंने प्यार किया उसके साथ,

....

तेरे खड़े होने का अंदाज़

तेरे खड़े होने का अंदाज़,
तेरे मुस्कुरानें का अंदाज़,
तेरे देखने का अंदाज़,
तेरे हाथ पकड़ने का अंदाज़,
तेरे बात करने का अंदाज़,
तेरे चलने का अंदाज़,
गर गौर करके देखो,
तेरे अंदाज़ बदलें का अंदाज़,

....

बजिबे खातून

बजिबे खातून,
तुझे ख़त लिखता रहा,
जवाब न तेरा आया,
पर मैं लिखता रहा,
स्याह हो गयी जिन्दगी,
स्याही से, तू एक जवाब दे दे,
रोशनाई से,

तेरे बेपनाह हुश्न की तारीफ़ करता हूँ,
तेरे अंदाज़े बयां की तारीफ़ करता हूँ,
तेरी सादगी की तारीफ़ करता हूँ,
तेरी अदायगी की तारीफ़ करता हूँ,

सफ़क रोशनी है,
आखें चुंधिया-सी गयी,
नूर है हुश्न का,
चमक बिजली-सी गयी,

देख न यूँ हुश्न को,
नज़र का लगा यूँ,
ये हुश्न की बेपर्दादारी है,
देख न उसे यूँ,

....

दस्तूर

दस्तूर,
ऐसा तो,
नहीं है,
की, बिके,
मल्लिका-ए-ख्वाब,
(Dream Girl),
का,
ख़िताब (अवार्ड),
सरे बाज़ार,

देने वाले,
तो हम हैं,
क्यूंकि,
ख्वाबों की,
मल्लिका तो,
तुम हमारी हो,
वो,
क्यूँ हो,
रहे हैं,
इस तरह,
बेजार,

....

एक अंजुमन

एक अंजुमन इतनी उल्फत,
हो गयी है तुझसे,
तेरा बिना अब रहा,
नहीं जाता दूर न जा मुझसे,

जानिब तेरे जमाना खड़ा है,
मैं तो अकेला हूँ,
प्यार कर मुझसे,
आगाज़ कर रहा हूँ,

अपने दिल का हाल कह रहा हूँ,
तुझसे तू आरजू है,
दिल की तू ज़ुबान है,
दिल की तू धड़कन है,

दिल की तू अंज़ुमन है,
दिल की तुझे देखे बिना,
धडकता नहीं दिल मेरा,
तू दूर है तो क्या,
तेरी तस्वीर से बसा दिल मेरा,

....

नागवार गुजरी जिन्दगी

नागवार गुजरी जिन्दगी,
तेरा दीदार न कर पाया,
तुझे तस्वीरों में तो देखा है,
पर अभी सामने न देख पाया,

मंज़र-ए-हुश्न का तू दरिया है,
डूब भी जाऊं तो मेरा फायदा है,
इश्क का भूत चढ़ गया है,
अब तेरे बिना रहा न गया है,

उल्फत हुई तुमसे,
मुहब्बत हुई तुमसे,
जीने का अंदाज़ आया तुमसे,
न किया कुछ बिना जाने तुमसे,

बरबस ये हुश्न है, ये जवानी है,
तू ताकीद न कर, ये रवानी है,
फ़क्त दिल में उतरी, दीवानी है,
आ मौज कर ले, मस्तानी है,

....

उफ़ यह तेरा घूरना

उफ़ यह तेरा घूरना
यह तेरा मुस्कराना,
दिल पर मेरे इस कलम से
तेरा लिखना,

जुल्फों के इस साए में
समां जाने को जी चाहता है,
आखों कि इस सोखी में
समां जाने को जी चाहता है,

तेरी इस अदा पर
मर मिटने को जी चाहता है,
तेरी मुस्कराहट में
बस जाने को जी चाहता है,

ख्वाबों कि मल्लिका का
ख़िताब तुझे मैंने दिया,
तेरी खूबसूरती तेरी अदा का
हक़ मैंने अदा किया,

तुझे ग़रूर नहीं है तेरे हुश्न का
यह मैंने कह दिया,
तू झांकती है दिल के
अन्दर मैंने महसूश किया,

कत्रीना ये तेरा हुश्न है कि,
आखों को ताजगी देता,
तेरी खूबसूरती का आलम
दिल को सुकून देता,

....

उफ़ ये अदा

उफ़ ये अदा,
हो गए जिस पर फ़िदा,
न रहा गुमान,
न रहा इमान,

ये जुल्फें ये नजरें,
ये होंठ ये अदा,
ये चेहरा या खुदा,
या खुदा या खुदा,

रब यह कैसी नजाकत है,
रब यह कैसी हुश्न परि है,
रब यह कैसी तुफ्लिश है,
रब यह कैसी मोहब्बत है,

हाय यह तेरा नाज़ुक बदन,
आखों की सोखियों का चमन,
लहराती जुल्फों का दामन,
मदमस्त जावानी की उफन,

....

तेरे इस नए

तेरे इस नए अंदाज़ की,
तारीफ़ मिलेगी तुझे,
तेरी काबलियत पे,
यकीन पक्का है मुझे,

तेरा अंदाज़ अनोखा है,
तुझे आज शायरी करते,
देखा है इतनी आदयें,
हैं तुझमें तेरी अदाकारी,
का फन आज देखा है,

कायल हुआ,
घायल हुआ,
आवाज़ के साथ,
अंदाज़ के साथ,
मिमिक्री के साथ,
हंसने के साथ,
हंसाने के साथ,
आदकारी के साथ,
लाज़बाब हुआ,
खुश-ओ-आब हुआ,

....

गौर से देखना

गौर से देखना आईना,
कभी चेहरा न दिखाता है,
उसमें तो भूत का,
अक्श भी दिखाई देता है,

भूत के पास तो,
जिस्म भी न होता है,
आईना रूह को,
कंपा देता है,

आदमी की असली सूरत,
दिखा देता है,
तभी तो बड़े-बड़े लोग,
आईना न देखते हैं,

वो तो अपने सजने-सवरने,
के लिए गुलाम रख लेते हैं,
भूल से भी गर वो,
आईना देख लेते हैं,

तभी वो अपने में झाँक लेते हैं,
कितना बदल गए सोच लेते हैं,
बचपन में कितने मासूम थे,
अब कितने मीने हो गए जान लेते हैं,

यूँ ही आईने को दोष न दो,
उसने गर हकीकत दिखा दी,
तो आंशु निकल आयेंगे,
फिर कभी आईने के सामने न आयेंगे,

....

वो हड़बड़ी में

वो हड़बड़ी में,
गड़बड़ी कर रहे थे,
कहना कुछ चाह रहे थे,
कह कुछ रहे थे,

इतनी मासूमियत से वो बोलते हैं,
उलझन में न जाने क्या-क्या बोलते हैं,
दिल में उल्फत-सी घोलते हैं,
उलझन में चैन-ओ-अमन खोजते हैं,

....

आप वहाँ

आप वहाँ अपने दिल को,
थाम बैठे हो,
हम यहाँ अपने दिल को,
थाम बैठे हैं,

कुछ शाम आप गुज़ार लेते हो,
कुछ शाम हम गुज़ार लेते हैं,
यूँ ही दिन-रात आप काट लेते हो,
यूँ ही दिन-रात हम काट लेते हैं,

आप हमें याद कर लेते हो,
हम आपको याद कर लेते हैं,
हमारी धड़कने आप सुन लेते हो,
आपकी धड़कने हम सुन लेते हैं,

हमारे दिल से आप जी लेते हो,
आपके दिल से हम जी लेते हैं,
हमारे इंतज़ार में आप बैठे हो,
आपके इंतज़ार में हम बैठे हैं,

....

गम-ए-महफ़िल में

गम-ए-महफ़िल में,
हमें भी शामिल कर लो,
यारों आज उसकी याद,
बहुत सताती है,

वो इधर फिर उधर से न जाने,
कहाँ-कहाँ से सताती है,

उसकी यादों से भरा है,
जहन मेरा उसी से,
निकल-निकल,
कर सताती है,

बहुत प्यार है उसे मुझसे,
फिर भी,
न जाने क्यूँ,
सताती है,

....

तुझे भुलाकर

तुझे भुलाकर भुला न सके,
तू याद दिन-रात आती है,
निगाह खुली रखो की बंद,
तू ही बस नज़र आती है,

मेरी तन्हाई में मेरी रुखाई में,
बिन बुलाई चली आती है,
भगाना चाहता हूँ तुझे,
तू लौट-लौट आती है,

तेरे बिना जीना सीख लिया,
क्या यही देखने आती है,
तेरी याद में रो रहा हूँ,
क्या यही देखने आती है,

ऐसे-ऐसे वक्त वेवक्त चली आती है,
बात सही है मुझे तेरी याद आती है,
तू न अब दिल से जाती है,
पल-पल तू याद आती है,

....

आप न आये

आप न आये महफ़िल में,
बात किससे करें,
मसरूफ हैं अपने-अपनों में,
बात किससे करें,

बैठे हैं तन्हा महफ़िल में,
बात किससे करें,
निगाहें टेके हैं,
दर पे बात किससे करें,

इंतज़ार हैं आपका कर रहे,
बात किससे करें,
हो गए हैं मायूस,
अब बात किससे करें,

जा रहे महफ़िल से,
अब बात किससे करें,

....

जो दिल लगाते हैं

जो दिल लगाते हैं,
चोट-ए-दिल खाते हैं,
तुम क्या जानो,
कैसे दिल लग जाते हैं,

तन्हा-तन्हा-सी जिन्दगी में,
फूल जब खिल जाते हैं,
उडती-उडती-सी महक से,
दिल खुद-ब-खुद लग जाते हैं,

करना क्या इसमें, कुछ भी तो नहीं,
नज़र से नज़र बस मिलाते हैं,
नज़रों से दिल में उतर जाते हैं,
धड़कन से धड़कन बस मिलाते हैं,

दर्द उसको नहीं मुझको होता है,
जब दिल से दिल मिल जाते हैं,
बचके हमको चलना पड़ता है,
नहीं तो चोट वो खाते हैं,

तो ऐसे दिल मिलाते हैं,
नज़रों से दिल मिलाते हैं,
तरन्नुम में फिर गाते हैं,
सबको पसंद आते हैं,

....

है कयासे अब हुस्न के

है कयासे अब हुस्न के
लगाए कैसे जाते हैं,
न जाने इस जमाने में दिल
मिलाये कैसे जाते है,

है बहुत दूर जिन्दगी अब उससे,
वो जिन्दगी में बुलाये कैसे जाते हैं.

जो वो नहीं है वही होने की
कोशिश करते हैं,
जिन्दगी में वो भुलाए
कैसे जाते हैं,

....

जब बज़्म दिल

जब बज़्म दिल में सजने लगे,
नगमे पे नगमे निकलने लगें,
नज़्म पे नज़्म गाने लगें,
गजल पे गजल आने लगे,
हर तरफ मौशिकी बजने लगे,
समझना अब दिल लगने लगे,

....

अक से

अक से,
अकीयत से,
न नुसरत से,
नसीहत से,

सबे खताए,
हो गयी है,
तो,
जुस्तुजू कैसे करें,

अब-ए-दयाये,
तो होने दे,
फिर,
मुस्तफ़नू करें,

....

आहें भी न भरें

आहें भी न भरें,
आँशु भी रोक लें,
चेहरा भी ज़र्द न हो,
तो कौन कहेगा
की हमने,
किसी बेवफा का,
दर्द झेला है,

सब तो,
कुछ और,
समझेंगे,
सोचेंगे,
कोई,
बेगैरत,
झमेला है,

....

तेरे इस नए

तेरे इस नए अंदाज़ की,
तारीफ़ मिलेगी तुझे,
तेरी काबलियत पे,
यकीन पक्का है मुझे,

तेरा अंदाज़ अनोखा है,
तुझे आज शायरी करते देखा है,

इतनी आदयें हैं तुझमें,
तेरी अदाकारी,
का फन आज देखा है,

कायल हुआ,
घायल हुआ,
आवाज़ के साथ,
अंदाज़ के साथ,
मिमिक्री के साथ,
हंसने के साथ,
हंसाने के साथ,
आदकारी के साथ,
लाज़बाब हुआ,
खुश-ओ-आब हुआ,

....

तू बहुत निखर गयी है

तू बहुत निखर गयी है,
शबाब-ए-हुश्न से लद गयी है,
वक्त के साथ-साथ या
खुदा कितनी सुन्दर हो गयी है,

क्या अदा है,
मेरी जान, तुझ पर फब्ती है,
तेरी जुल्फों में,
तेरी आखों में वो मस्ती है,

चड़ी हुई आखें,
कुछ कह रही हैं,
वो यहाँ नहीं,
किसी और मकाँ की खबर दे रही हैं,

इतनी निखर जाओगी,
इतनी हसीन हो जाओगी,
सोचा न था ख्वाब में,
यूँ ही सबको पसदं आओगी,

तेरे यूँ देखने से,
तुझ पर फ़िदा हो गया,
तेरे बिना रहा नहीं जाता,
ये क्या हो गया,

आय हाय,
इस तरह से अगर यूँ ही हंस देगी,
खुदा कसम,
अपनी किस्मत यूँ ही खोल देगी,

....

दिल लगा था

दिल लगा था, तभी दिल की लगी थी,
इधर मेरे, उधर तेरे दिल की लगी थी,
तुझे लगा की दिल्लगी मैंने की थी,
शामिल तो तू भी अपने दिल से थी,

बिना कश्ती के समंदर में आ गयी थी,
याद न रहा, कि लहरों पर चल रही थी,
वफ़ा तो तुने बीच समंदर में छोड़ी थी,
मेरे पैरों के नीचे तो वफ़ा कि लहरें थीं,

खड़ा हूँ अभी भी वहीं,
तू देख न रही थी,
वफ़ा तो तुने छोड़ी,
तू तभी डूब रही थी,
ले हाँथ देता हूँ,
तू क्यूँ सिमट रही थी,
आगोश में आजा,
क्यूँ न लिपट रही थी,

भरोसा न रहा तुझे मेरा,
बात लग रही थी,
तभी तो तू वफ़ा को छोड़,

उलहना दे रही थी मुझे छोड़,
किश्ती पर भरोसा कर रही थी,
क्या तेरी निगाह
किश्तवान से लग रही थी,

....

गले में हाथ था

गले में हाथ था,
लिपटी हुयी थी मुझसे,
फिर भी कहती है की,
दूर थी तब तुझसे,
तो क्या वो सिमट जाना,
सरे आम लिपट जाना,
मेरे आगोश में आ जाना,
एक सिफ्कन थी, जाना,
माने दिल से,
तिल भर की दूरी थी,
आज पता चला,
क्यूँ मुझसे दूरी थी,

....

तभी दस्तक हुयी

तभी दस्तक हुयी,
तैयार नहीं हुयी,
बारात आने को हुयी,
तू क्या दुल्हन हुयी,

क्या पता उनको,
दुल्हे के दोस्त से,
उस दिन कुछ,
नज़र लड़ गयी थी,
उसी के लिए,
तो इतना सज,
सँवर रही थी,

शादी का माहोल था,
ढूंढ उसे रही थी,
तभी दूल्हे की,
बहिन ने,
परिचय किसी से,
करवाया,
इनसे मिलिए,
ये हैं मेरी भाभी,
मैं चोंकी,
वो बोली,

नहीं-नहीं,
जो भैया,
के दोस्त हैं न,
ये हैं उनकी,
घरवाली,

अब क्या कहूँ,
दर्द को छिपाया,
मुस्करा कर,
हाथ मिलाया,

....

कितना तन्हा

कितना तन्हा,
वो लग रहा है,
बड़ा उदास,
वो लग रहा है,

जानती हूँ उसे,
देखता है,
खिड़की से,
रोज़ वो मुझे,

शायद कोई बात हो,
क्या पता क्या बात हो,

जा नहीं सकती,
उसके पास,
उससे कुछ,
कह नहीं सकती,

लड़की हूँ न,
जमाना देखता है,
कुछ हो न,
रोटियाँ सकता है,

....

इन कल्पनाओं की

इन कल्पनाओं की,
उडान को,
किस डोर से,
मैं थामू,

अनंत आकाश के,
मन में,
इधर-उधर,
उड़ रहीं हैं,

रोकूँ तो,
कैसे रोकूँ,
रुक न,
रहीं हैं,

इस कल्पनाओं की...........

....

इतनी बेशर्म निगाह

इतनी बेशर्म निगाह,
घूरते ही,
जा रही है,
शर्म उसको,
न आ रही है,

मुझमें उसने,
क्या देखा,
जो सरे बाज़ार,
दीवाना हो गया,

मैं तो कुछ,
ख़ास नहीं हूँ,
फिर भी दीवाना,
हो गया,

नज़र मेरी भी,
न हट रही अब,
सोच उसी,
के बारे में,
रही अब,

वो तो,
देखते ही,
जा रहा है,
नज़र अब भी,
न हटा, रहा है,

कुछ तो करूँ,
कैसे यहाँ,
से हटूँ,

नहीं तो,
बदनाम कर देगा,
सरे बाज़ार,
नाम कर देगा,

पर उसकी,
वो कशक,
दीवाना-सा,
कर गयी,

उसकी वो नज़र,
उस पर,
मैं मर गयी,

....

किसी से

किसी से,
कैसे कहें,
की तुमसे,
मोहब्बत करते हैं,

यह तो,
बेशर्मी होगी,
कहें की,
तुम पे ही,
मरते हैं,

तो क्या,
नज़र,
कह न सकेगी,
सीधे दिल में,
उतर न सकेगी,

ओंठों को क्यूँ,
इसमें शामिल करें,
जब दिल-से-दिल की,
बात होने लगेगी,

....

इतनी संजीदगी

इतनी संजीदगी,
इतनी आतिफ-ए-आलब्दारी,
तुझे देखते ही,
चली जाती है,
सबकी हुसयारी,

घनी बात कहनी है थारे से,
सपनों में मिलनी है थारे से,
पर डर लागे है थारे से,
सोचा न जाए मारे से,
के बोलूँ इब थारे से,

यूँ तन्ने रोज़ टी. वी. पे,
देखता रहूँ, तेरे जैसा सब पे,
मेरा भी रुआब हो,
सोचता रहूँ,

तेरी छोट्टी-छोट्टी बातें,
कितना घना ज्ञान दे जावें,
तभी तो सारी जणता,
अपने कुणबे के साथ,
तुझे देखने टी. वी. पे आवें,

....

आज सज लूँ

आज सज लूँ,
थोडा सँवर लूँ,
सोच रही हूँ,
कौन-सी साडी,
आज पहर लूँ,

लिपस्टिक कौन-सी,
टीका कौन-सा, हार कौन-सा,
सेंडल कौन-सी, आज पहर लूँ,

बाल भी धोएं हैं, इन्हें सवारूँ,
या खुला ही, छोड़ दूँ,

वक्त आने का,
हो रहा है उनका,
जी घबराने का,
हो रहा है मेरा,

जल्दी-जल्दी, कर लूँ,
नहीं तो फिर, ताने देंगे,

....

आज सब्जिओं में

आज सब्जिओं में,
मिट्टी ज्यादा ही थी,
क्यूँ ऐसी सब्जी,
आज उन्होंने खरीदी थी,

क्या मुझसे कुछ,
बदला लेना था,
साफ़ करने का,
अधिक काम देना था,

कल की कहा सुनी का,
शायद ये असर था,
लगता है उन्होंने मन,
अभी झाडा नहीं था,

धीरे-से बुलाया,
हाथ में एक,
पैकेट है पकडाया,
ठंडा-सा था,

मुस्कुराकर,
कहा उन्होंने,
खा लो जल्दी से,
पिघले न गर्मी से,

....

कुछ कह

कुछ कह गयी वो,
देखते-देखते किनारा कर गयी वो,
पीछे-पीछे दीवाना मैं,
ढूढूं उसका ठिकाना मैं,

इस घनी बस्ती में,
कोई कैसे मिले,
पर हार न मान,
दिल जैसे मिले,

सुन धड़कन दिल की,
उसके दिल से बेतारी होगी,
दिल धड़केगा उसका,
धड़कन तेरे दिल में होगी,

सीध वही साध लेना,
घर उसका ढून्ढ लेना,

लगी बात सही धड़कन से धड़कन,
थोड़ी अब मिलने लगी,
चलते चले सामने के,
दालान में बैठी वो दिखी,

काम वो कर रही थी,
देख न इधर रही थी,
कदम ठिठके धीरे-से मुड़ा,
घर को आया चैन से सोया,

....

वो ऐसे शरमाई

वो ऐसे शरमाई,
दिल में उतरती आई,
बुझी आस जगाई,
पोपट की होने आई,

दुश्मनी को मिटाने चल दिया,
दोस्त को मनाने चल दिया,
इनको पटाने के लिए,
पोपट दुश्मनी को भुलाने चल दिया,

अपनी ही तारीफ़ अपने ही
मुँह से कर रहे हैं,
पोपट का नाम यथार्थ में
साबित कर रहे हैं,

अब काम में अडंगा न डालो,
बना बनाया काम न बिगाड़ो,
तुम्हारे मंसूबे को गर जान गए,
तुम्हारे फिर तोते उड़ गये,

दिल पर थोडा काबू रखो,
यूँ न बेकाबू रखो,
बात उनको अपनी कहने दो,
बड़े दिन के बाद दोस्त से मिलने दो,

वो किसी और की निकलीं,
नज़र उन पर मेरी फिसली,
अब कैसे मुँह छुपाऊं,
ठहरूं या शर्म के मारे भाग जाऊं,

उसको उसकी कर दिया,
जिसके नसीब की थी,
मेरी जिन्दगी खाली रही,
जो मेरे नसीब की थी,

....

एक माचिस तक

एक माचिस तक,
मोबाइल से मंगवाते हैं,
अपने को पत्रकार तक कहलवाते हैं,
कितना आलसी हो गए हैं,
किसी काम के न रह गए हैं,

एक हसीना का फोन आ गया,
काम अपना भूल गया,
भूँख भी अपनी भूल गया,
हसीना को अपना बनाने में लगा गया,

कहाँ से कहाँ बात लड़ा रहा है,
एक तीर से तो निशान लगा रहा है,
बात-बात में उसे पटा रहा है,
अपनी बात, बात-बात में बता रहा है,

झटका वो खायेगा,
जब असलियत वो जान जाएगा,
उस हसीना को एक,
कातिल हसीना जब को पायेगा,

....

लहजा-ए-तारुफ़

लहजा-ए-तारुफ़,
आपका यूँ भा गया,
नाज़ुक अंदाज़
आपका पसंद आ गया,

कितनी मासूम, कितनी ज़हीन,
नाज़ुक अदा आपकी है,
कितनी महीन, कितनी हसीन,
यह नजाकत आपकी है,

हर दूरियाँ मिटाकर,
आपके दिल तक पहुँचे हैं,
हम मिट-मिट कर,
आपके दिल तक पहुँचे हैं,

परदानसी आप हुए,
याद पुराना जमाना आ गया,
नजाकत परदे में ही होती है,
आज समझ आ गया,

गर आपसे ज़ुबान में यूँ कहना हो तो,
यूँ रूबरू होना पड़ेगा,
हो तो जाएँ रूबरू आपके,
पर हमें देख आपको रोना पड़ेगा,

....

यूँ अहसास तो बहुत था

यूँ अहसास तो बहुत था,
उसका दिल जो दुखाया था,
पर क्या करें उस वक्त,
कुछ समझ न आया था,

उसकी उन बातों में वो चिड सी थी
जैसे शिकायत नहीं इड सी थी,

न अब दिल न रख सकेंगे उसका,
अब सुख न दे सकेंगे उसका,
इक बार जो निकल गया जबान से,
अब वापस न ले सकेंगे, उसका,

यही तो हमारी मोहब्बत का पैगाम है,
उसको दूर अब कर दिया है,
अपने दिल से भी निकाल दिया है,
तन्हाई में अब रहने की फरमाईश है,

....

हर हायनेश शहजादी-ए-फेकबुक

हर हायनेश शहजादी-ए-फेकबुक
पिंकी प्रिंसेस को
शहजादा-ए-मण्डोर
पप्पू परिहार का सलाम,

पिंकी प्रिंसेस क्या नाम चुना है,
लगा गया चंद्रमुखी पर चाँद कई गुना है,
हमें तो शुरू से ही अंदेशा हुआ है,
आप शहजादी हो आज
खुलाशा हुआ है,

आपकी अकड़
शहजादियों से कतई कम नहीं हैं,
आपकी पकड़
शहजादियों से कतई कम नहीं हैं,

चाँद जैसे मुख वाली
कोई शहजादी ही हो सकती है,
शहजादी में ही तो इतनी
अकड़-पकड़ हो सकती है,

चैटिंग से सेटिंग आप करा रहे हो,
फेक खाता फेकबुक में बना रहे हो,

चलो आप भी एक नए
नाम से आ रहे हो,
फेकबुक पर असली
पहचान छुपा रहे हो,

हमने तो आपको
पहले दिन ही पहचान लिया था,
जब आपके अंदाज़ से
अंदाजा जो लगा लिया था,

आप शहजादी हो यह जान लिया था,
आपने काबू में जो सबको कर लिया था,

राजकुमार का सफ़ेद
जूता है हर फिल्म में पहले निकलता,
यूँ आपके जूता निकालने की अदा से
अंदाजा यह निकलता,

वो राजकुमार हैं,
तो आप राजकुमारी हैं,
आपकी यह अदा है

लगे सबको प्यारी है,
पहले शो में आपकी वो आँखें,

आपका नूर-ए-चेहरा,
शहजादी हो आप, आपके चेहरे का
टपकता नूर कह रहा,

आपकी वो चाल,
आपका वो अंदाज़,
शहजादी हो आप,
सामने आ गया आज,

वो आपका डंडा,
अभी न हुआ ठंडा,
अब तो लात घूसे बजते हैं,
कभी-कभी डंडे भी लगते हैं,

हर किसी को डर लगता है,
आपसे,
हर कोई दिल ही दिल में
प्यार करता है, आपसे,

कह नहीं पाता कोई,
आपसे,
डर जो जाता है हर कोई,
आपसे,

अब तो कोई शहजादा ही आएगा,
आपकी आँख से आँख मिलाएगा,
दिल में आपके उतर जाएगा,
आपके साथ दिल में बैठ जाएगा,

शहजादा ही तो शहजादी को पायेगा,
ऐरा-गैरा नत्थू खैरा कहाँ टिक पायेगा,
आपके निगाहों से जो टकराएगा,
चूर-चूर वो तो पहले ही हो जाएगा,

शहजादियों के नखरे,
शहजादियों की समझ,
आपमें पहले दिन ही देख ली थी,
शहजादियों की चमक,
शहजादियों की दमक,
आपमें पहले दिन ही देख ली थी,

पहले ही दिन से छा गए आप,
सबके दिल में समां गए आप,
हँसते-हँसाते जिन्दगी से
रूबरू करा गए आप,

हंसी-हंसी में,
बहुत कुछ सिखा गए आप,
अब तो आपको देखकर ही सोते हैं,

कितने भी थकें हो,
हंसकर लोट-पोट होते हैं,
थकान छूमंतर हो जाती है,
वो भी आपको देख कर मुस्कुराती हैं,

....

जब वो लौट के आये

जब वो लौट के आये,
अपनी महफ़िल में,
तो अपनी महफ़िल भी
बेगानी लगती थी,

चेहरे अलग लगते थे,
मोहरे अलग लगते थे,
जाने पहचाने लोग भी,
अचरज से घूरते थे,

क्या यह वह जगह थी,
जो छोड़ कर गया था,
या फिर कोई और जगह,
जहां मैं आ गया था,

इनसे भी दूर हो गया था,
उनसे भी दूर हो गया था,
मशगूल कहीं हो गया था,
मशहूर पर हो गया था,

....

तू गाती रहे

तू गाती रहे, इसी तरह
ये दुआ करता हूँ खुदा से,
तेरी खूबसूरती बनी रहे,
ये दुआ करता हूँ खुदा से,
तेरी सूरत खूबसूरत है,
पर तेरी सीरत उससे भी
ज्यादा खूबसूरत है,
तेरे दिल के साफ़,
आईने में,
सब की दिल की बात नज़र आती है,
पर तेरी आवाज़ और
तेरी तस्वीर पास है मेरे,
ताउम्र,
जिन्दगी गुज़ार लूँगा,
उसी के सहारे,
आवाज़ तेरी,
सब गम भुला देती है,
इस जहां से,
किसी और जहाँ में पंहुचा देती है,

....

तेरी मुशकुराहट

तेरी मुशकुराहट
और तेरी आखें,
बात कुछ कह रहीं हैं,
तेर ओंठ और तेरी जुल्फें,

बात कुछ कह रहीं हैं,
तेरा गठीला बदन
और तेरे गालों की शोखी
बात कुछ कह रही हैं,

तुझे नज़र न लग जाए,
किसी की,
शायद बात ये
कुछ कह रहीं हैं,

....

तू आरजू है

तू आरजू है दिल की,
तू जुबान है दिल की,
तू धड़कन है दिल की,
तू अंजुमन है दिल की,

तुझे देखे बिना,
धडकता नहीं दिल मेरा,
तू दूर है तो क्या,
तेरी तस्वीर से बसा दिल मेरा,

....

हर तरफ किस्से हैं

हर तरफ किस्से हैं,
तेरी सोखी के,
तेरी आवाज़ के,
तेरे हुश्न के
और तेरी अदा के,
तेरी अदावत के,

जमाना बात करता है,
कि तू सबके दिल का
हाल जान लेती है,

वक्त को तू पहचान लेती है,
तभी तो तू सबको मान देती है,
ऐसी बात सभी में नहीं होती है,
पर बात तेरी अनोखी है,

क्यूँकि खुदा ने तुझको,
खूबसूरती और आवाज़
दोनों एक साथ बक्शी है,

....

इस तरह तू

इस तरह तू
मुझे न देख,
मुझे तुझसे लगता है डर,

बात सिर्फ इतनी-सी नहीं है,
दिल का तो तू है समंदर,

पर तेरी आवाज़
और तेरे अंदाज़ से
मुझे लगता है डर,

इज़हार तो करना चाहता हूँ,
अपने दिल का मन्ज़र,

चन्द लम्हों कि तो बात है,
बस तेरा थोडा-सा तो साथ है,
माकूल जिन्दगी की बात है,
हुश्न जो तेरा मेरे साथ है,

....

एक अंजुमन

एक अंजुमन,
इतनी उल्फत हो गयी है,
तुझसे,
तेरा बिना अब रहा नहीं जाता,

दूर न जा मुझसे,
जानिब तेरे जमाना खड़ा है,
मैं तो अकेला हूँ
प्यार कर मुझसे,

आगाज़ कर रहा हूँ,
अपने दिल का हाल कह रहा हूँ
तुझसे,

....

हाल दिल का

हाल दिल का सुना दिया,
तुझे अपना बना लिया,
तुझे पता हो कि न हो,
दिल तुझसे लगा लिया,

उल्फत हुई तुमसे,
मुहब्बत हुई तुमसे,
जीने का अंदाज़ आया तुमसे,
न किया कुछ बिना जाने तुमसे,

....

किया वादा

किया वादा जब प्यार का,
फिर क्यूँ मुकर गए तुम,
हाल दिल का अपना सुनाया,
क्यूँ बिफर गए तुम,

जानिब यह तो प्यार है,
इसे क्या समझोगे तुम,
मोहब्बत में तेरी,
सारा वक्त हम रहते हैं गुम,

....

गुरुरे हुश्न

गुरुरे हुश्न,
मैं तुझे ताकीद न कर पाया,
देखता रहा तुझे,
तस्लीम न कर पाया,

खता माफ़ हो,
या सजा दे दो,
पर नज़र न हटे तुझसे,
ऐसी जगह दे दो,

मायने जिन्दगी के तुमने बदल दिए हैं,
बेपनाह हुश्न जो तुमने पाया है,
जिन्दगी कि भी अब खबर नहीं, जबसे
तुमको इन तस्वीरों में देख पाया है,

....

तेरी आदायगी

तेरी आदायगी और
अदावत की दाद देता हूँ,
तू इतना सुलझा है कि
तुझे सलाम देता हूँ,

तेरे नखरे और
नाज़ उठा सकता हूँ,
तू न माने,
तुझे अपनी बना सकता हूँ,

ये जो तेरा गुरुर है,
तेरे हुश्न का नूर है,
इसी में तू अच्छी लगती है,
ऐसी ही तू मुझे कबूल है,

....

इतनी सफाई से

इतनी सफाई से
केश को सोल्व करती हो,
की किसी को
भी भनक नहीं लगने देती हो,

रुसवा नहीं होता कोई,
ऐसा इन्साफ दिलाती हो,
अंदाज़ तुम्हारा निराला है,
सबसे बड़े सलीके से
पेश आती हो,

तेरे घने बालों की कसम
तुझपर यह फबते हैं,
तुझे देखकर लोग
तभी तो फब्तियां कसते हैं,

बुरा न मान
मैं तो तुझे मान दे रहा हूँ,
तेरे फन को
और एक फैन दे रहा हूँ,

तेरे लट्ठ पन ने
तुझे एक मुकाम दिला दिया,
तुझे सारे ज़माने में
इस कदर चमका दिया,

तेरी अक्ल की
दाद देता है यह जमाना,
चंद्रमुखी चौटाला का भी है
एक फ़साना,

....

तेरी खूबसूरती

तेरी खूबसूरती
तेरी अदा का
हक़ मैंने अदा किया,

तुझे ग़रूर नहीं है
तेरे हुश्न का
यह मैंने कह दिया,

तू झांकती है
दिल के अन्दर
मैंने महसूश किया,

ख्वाबों कि
मल्लिका का
ख़िताब तुझे मैंने दिया,

उफ़ ये शर्मना,
ये हया, ये नजाकत,
ये छुपी हुए सी हंसी,
ये झुकी हुए सी नज़रें,

फलसफा-ए-हुश्न का,
तेरे अफसाने से शुरू होगा,
तू ख़ूबसूरत इतनी है,
कि जमाना तेरे हुश्न का कायल होगा,

उसपर तेरी सोखी का आलम
इस कदर समां गया है,
तू महफ़ूज़ रहे,
तेरे भीतर खुदा का नूर समां गया है,

जुल्फों के इस साए में
समां जाने को जी चाहता है,
आखों कि इस सोखी में
समां जाने को जी चाहता है,

तेरी इस अदा पर
मर मिटने को जी चाहता है,
तेरी मुस्कराहट में
बस जाने को जी चाहता है,

कत्रीना ये तेरा हुश्न है कि,
आखों को ताजगी देता,
तेरी खूबसूरती का
आलम दिल को सुकून देता,

कुछ होश नहीं है,
जिन्दगी का अब तस्वुर में तेरे,
वक्त कट जाता है,
तेरी चन्द तस्वीरों के सहारे,

उफ़ यह तेरा घूरना
यह तेरा मुस्कराना,
दिल पर मेरे इस कलम से
तेरा लिखना,

....

हसीनाओं के नखरे

हसीनाओं के नखरे उठाना,
हर किसी कि बात नहीं है,
ये क़त्ल भी करती हैं,
फिर पानी भी पूछती हैं,

ये तड़पाती हैं,
फिर हाल भी पूछती हैं,
यह जुल्म भी करती हैं,
फिर मुलाज़मत भी करती हैं,

....

छुरियां चल जाती

छुरियां चल जाती हैं,
सरे बाज़ार
तेरे हुश्न कि खातिर,

दोस्तों मैं भी जंग,
छिड जाती है
तेरे हुश्न कि खातिर,

तेरे हुश्न पर
जवानी इस कदर छाई है,
तू बस
मेरे लिए ही
इस दुनिया में आयी है,

....

तुझे बहुत याद किया

तुझे बहुत याद किया,
तेरे और अपने बीते हुए
लम्हों को सहेज कर रखा है,

बस उन्ही के सहारे
वक्त गुज़ार रहा हूँ,
तुझे दिन रात
याद कर रहा हूँ,

तुझे देखे जमाना हो गया,
मस्ताने से तेरा दीवाना हो गया,
पल पल तेरी याद में,
दर दर भटकने वाला बेगाना हो गया,

....

वक्त कि फितरत

वक्त कि फितरत है,
कि तू मुझसे दूर है,
तेरा इक दीवाना,
तेरे दिल के करीब है,

बातें होती हैं,
रोज़ ख्वाबों में
मुलाकातें होती हैं,
हाल-चाल पुछा जाता है,
हंसी-ठिठोली होती है,

तुम्हे हुश्न दिया है
तो नजाकत भी दी है,
तुम्हे घमंड नहीं दिया है
शराफत भी दी है,

....

आपकी आवाज़

आपकी आवाज़ को सुनकर अपने
कानो को सुकून देता हूँ,
आपकी अदावत को देखकर अपने
आखों को सुकून देता हूँ,

सरस्वती का वास है
आपके कंठ में,
मिठासी बोली रस घोलती है
कानों में,

समय का अनुमान नहीं रहता
जब आप होते हो आजतक पर,
ऐसा लगता है की अभी-अभी आये हो
और अब इतनी जल्दी क्यूँ जा रहे हो,

आपकी प्रस्तुति का ढंग निराला है,
भगवान् ने इसीलिए आपको ढाला है,
सारे ज़माने के प्रस्तोता देख लिए हमने,
पर आपके जैसे और कोई न मिला
ज़माने में,

....

तुझे हुश्न बक्शा

तुझे हुश्न बक्शा खुदा ने
और नजाकत भी दी है,
तेरी आवाज़ भी खुदा ने
तुझे एक तोहफे में दी है,

तेरी सोखी का
तेरी अदा का
तेरी पैमाइश का,
तेरी मुस्कान का
तेरी फनकारी का
दाद देता है जमाना,

तू महकती रहे
तू चहकती रहे
तू खुसबू बिखेरती रहे
तेरी आवाज़ की मिठास से
प्यास बुझाता है जमाना,

....

हाय यह तेरा

हाय यह तेरा नाज़ुक बदन,
आखों की सोखियों का चमन,
लहराती जुल्फों का दामन,
मदमस्त जावानी की उफन,

रब यह कैसी नजाकत है,
रब यह कैसी हुश्न परि है,
रब यह कैसी तुफ्लिश है,
रब यह कैसी मोहब्बत है,

....

किब्लाये हुश्न

किब्लाये हुश्न तेरा
बेपनाह निखर कर आया है,
नज़र न लगे किसी की
ढक ले इसको तो ज़रा,

हैं घूमते हुश्न के चोर हैं यहाँ,
बहुत नहीं तो जरा,
चुराकर कब ले जायेंगे, तु
झे ख्याल भी आया है,

....

सौफाके मुफ्त

सौफाके मुफ्त मुनज्ज़र
वक्त न मिला
तुझसे मिलने का,

नुशफरत नुमानी मुन्तज़र
एक बार हुआ
तुझे देखने का,

सौफदाई तेरी आखों की
गुज़र गयी दिल के
आर-पार,

बेपनाह हुश्न की मलिका
आवाज़ तो सुना दे
एक बार,

....

गुस्तगुल न हुआ, मजारे प्यार का

गुस्तगुल न हुआ, मजारे प्यार का,
ऐतबार तो लिख दिया, मेरे यार का,
हूँ फ़ना उसके, जानिबे दीदार का,
न इज़हार कर यूँ, अपने प्यार का,

फासिबे मोहब्बत
अब क्यूँ अफसाना हुआ,
नूर-ए-हलक तेरा हुश्न
अब क्यूँ दीवाना हुआ,

बेवक्ते तेरे दर पे उसका,
यूँ आना क्यूँ हुआ,
हालिबे उसके मजार पे,
यूँ जाना क्यूँ हुआ,

इदरिसे हसन्नुम,
उसका तरन्नुम, क्या सुना,
वक्त-ए-हाल,
मुनासिब ख्याल, उसका क्या सुना,

आदिसे हलक का,
उसका हलकान क्या सुना,
सुर-ए-नाज़ुक,
गले की सुरमाई, उसका क्या सुना,

दरीबे का आईना,
जिन्दगी के तजुर्बे से निखरा,
उसको देखते हुए,
जिन्दगी का तजुर्बा तिलखा,

हंसी आती,
निगाहें चुराती, जान गयी फलखा,
आबे दयार से निकला,
जब उसका यह तलबा,

....

न हुश्न था, न हुश्न की नुमाइश थी

न हुश्न था,
न हुश्न की नुमाइश थी,
आज गलियों में,
बेरुखी सी छाई थी,

उसका दर भी,
आज, बन्द लग रहा था,
उसके मिलने को,
आज, जी कर रहा था,

बस यूँ गुमसुम-सा,
घूम रहा था,
दोस्त न आज कोई,
मिल रहा था,

टहलते-टहलते यूँ ही,
दूर तक निकल गया,
वही पास एक चाय की
दुकान पर बैठ गया,

चुस्कियां चाय की अब चल रही थीं,
आखें अब भी उसके दर पर लगी थीं,
बेसब्री-सी यूँ बढ रही थी,
दिल की धड़कन तेज़ हो रही थी,

तभी न जाने कोन निकला,
दिल धक् से यूँ बिकला,
ये क्या कातिल बला थी,
अरे ये तो अपनी ही दिला थी,

किसी की कलाकारी ने
इसे और हसीन कर दिया था,
सुबह-सुबह इसको किसी ने
इतना रंगीन कर दिया था,

बाद में पता चला
चाय की दुकान पर,
आज इसको देखने आने वाले हैं,
घर पर,

दिल बैठ गया, मैं भी बैठ गया,
मुझको ये क्या सिला दिया,
किसी और की उसे बना दिया,
मैंने ऐसा क्या गुनाह किया,

उठा धीरे-से चल पड़ा
घर की ओर,
पड़ा बिस्तर पर,
कर पीठ उसके घर की ओर,

तभी घंटी बजी,
सामने खड़ी थी सजी,
मुस्करा रही थी,
बुलावा आने का भेजी,

साथ में कुछ सामान ले गयी,
आना ज़रूर जाते-जाते कह गयी,
सब घर जाने की तैयारी में लग गया,
मैं भी कोई बहाना ढूढने में लग गया,

अब कैसे जाना होगा,
कैसे मुँह दिखाना होगा,
बस जिन्दगी को भुलाना होगा,
आंसू पीकर शादी में इसकी जाना होगा,

....

कल यूँ बारिश

कल यूँ बारिश हो रही थी,
तेरी याद सता रही थी,
पता नहीं क्यूँ मुझे भी
बारिश अच्छी लग रही थी,

शायद इस मौसम में
तुम्हारी कमी खल रही थी,
अब ना जाया करो दूर,
तुम्हारी याद आ रही थी,

....

आ कर मेरे दरवाजे पर

आ कर मेरे दरवाजे पर,
यूँ न बैठा करो,
दरीचों से लोग देखते,
तुम न देखा करो,

देखकर इस तरह,
न मुझे सताया करो,
दूर हटो मेरे दर से,
कहीं और बैठा करो,
वक्त बिताने को,
कोई और दर ढूंडा करो,

....

मुद्दत से उदास

मुद्दत से उदास बैठा था,
किसी के न पास बैठा था,
कानों में कहीं दूर से,
एक सुरीला नगमा गूँजा था,

यूँ ही
सुनते-सुनते धीरे-धीरे
खुमार चड़ने लगा था,

उठा ढूँढा
तो पता चला
तेरा नगमा ही बज रहा था,

....

शर्मो-हया का

शर्मो-हया का फ़साना,
अब न दिखाई देता है,
कहीं-भी कोई दीवाना,
अब न दिखाई देता है,

सब तरफ बेहहाई है,
बेपरदा हुश्न की रवाई है,
नाज़ न अब हुश्न के पास है,
न वो शरमाई है,

....

करोगे जिनसे दोस्ती

करोगे जिनसे दोस्ती,
दुश्मनी भी उनसे निभानी पड़ेगी,
बात आयेगी मोहब्बत की,
कीमत उसकी चुकानी पड़ेगी,

दोस्त को यूँ ही,
कुर्बानी अपनी
मोहब्बत की देनी पड़ेगी,

हसीना के लिए,
जंग फिर
अपने दोस्त से
लड़नी पड़ेगी,

....

नाभि से सुर उठा

नाभि से सुर उठा,
नाद होकर,
छुआ दिल को,
अहसास होकर,

कंठ से निकला,
सुरीला होकर,
सुगंधा ने गाया,
सुगन्धित होकर,
सबने ने सुना,
आनंदित होकर,

....

है मोहब्बत

है मोहब्बत,
तो जता दे,
मेरे पैमाने से,

दूर क्यूँ है,
यूँ मेरे मयखाने से,

नफरत तो है,
मोहब्बत का आगाज़ यूँ,
समझ ले,

तुझे ले जाऊँगा मैं,
प्यार तू ये,
मेरा समझ ले,

....

हुश्न भी पाया है

हुश्न भी पाया है,
आवाज़ भी पायी है,
अदा भी पायी है,
अदाकारी भी पायी हैं,

सबसे बड़ी बात है की,
जज्बातों की कदर करती हो,
दूसरों के दिल की बात को,
अपने दिल से सुनती हो,

ये नवाजिस खुदा,
सबको नहीं देता है,
किसी खास को ही,
यह तोहफा देता है,

तुम पर खुदा की,
मेहर बनी रहे,
हम पर तुम्हारी,
नज़र बनी रहे,

....

लगाने को तो दिल लगाना

लगाने को तो दिल लगाना,
बस चन्द घड़ियों की बात है,
पर लगाकर फिर संभालना,
ये जन्मों-जन्मो की बात है,

कारीगरी इसमें,
मिट-मिट कर आती है,
किसी को भाति,
किसी को न सुहाती है,

बस इसका इतना तो,
असर पड़ता है,
जिन्दगी को दाव पर,
लगाना पड़ता है,

लगाते-लगाते,
फिर ये लग जाता है,
संभलते-संभलते,
ये संभल जाता है,

लो बता दिया दिल का फ़साना,
सोच कर न दिल लगाना,
यूँ दिल जब करे इनकार,
तो फिर दिल उसी से है लगाना,

....

अब अगली

अब अगली मुलाकात के,
वक्त का इंतज़ार रहेगा,
तुझे याद करते हुए,
अब दिन-रात कटेगा,

ऐसे तो यह वक्त,
बहुत खुशगवार गुज़रा,
याद रहेगा एक-एक लम्हा,
जो तेरे साथ गुज़रा,

....

न जानते थे

न जानते थे मोहब्बत,
तब किया प्यार उसने,
न समझ सके उसे,

जब इनकार किया उसने,
बात समझ, देर से आयी,
जब हमसे दूर होने आयी,

....

वक्त अब क्या

वक्त अब क्या,
अब तो,
जिन्दगी काट ली मैंने,

तेरी यादों को,
याद करके,
सारी उमर,
काट ली मैंने,

तुझे देखा,
कई वर्षों के बाद,
याद आया,
बीता हुआ,
अपना साथ,

मैं तो,
अब भी अकेला था,
पर तेरा कोई अपना,
था तेरे साथ,

....

है कुछ

है कुछ,
बहुत कुछ,
जिन्दगी में,
यूँ न गवां इसे बेहूदगी में,

बस थोडा और इंतज़ार,
वक्त कर देगा इज़हार,
यूँ न हो बेज़ार,
यु न हो बेक़रार,

....

अपनी मोहब्बत का

अपनी मोहब्बत का,
अफसाना सभी सुनाते हैं,
अपनी जिन्दगी का,
रोना सभी गाते हैं,

पर बात,
उसकी कुछ और है,
उसकी आखें,
गम गौर हैं,

झटका मिला है,
उसे बेवफाई का,
सिला मिला है,
किसी की बेहहाई का,

टूटे हुए दिल से,
एक आह निकली,
टूटे हुए दिल तक,
एक आह पहुंची,

....

क्यूँ उसे सताती हो

क्यूँ उसे सताती हो,
क्यूँ उसे रुलाती हो,
क्यूँ उसे जलाती हो,
क्यूँ उसे गुस्सा दिलाती हो,
क्यूँ उसका मजाक उड़ाती हो,
क्यूँ उसकी खिल्ली उड़ाती हो,
प्यार करता है तुमसे,
क्यूँ उसे बार-बार आजमाती हो,

....

पता उसका लगा

पता उसका लगा लिया,
जिसे देखा था,
राह पर अभी,
दिल में,
उसे बसा लिया,
जिसे देखा था,
राह पर अभी,

रोज़ गुजरती है,
इसी राह से,
आखें तरसती है,
इसे आह से,
फ़ना-सी खूबसूरत है,
बसा ले हर कोई,
ऐसी मूरत है,

....

यूँ खुलाशा गर

यूँ खुलाशा गर करने लगें,
तो बहुत से दिल टूट जायेंगे,
बहुत हमसे रूठ जायेंगे,
बहुत से घर यूँ ही टूट जायेंगे,

इसलिए रहते हैं,
यूँ न होने देते हैं,
पर्दा-ए-फास राज़,
कुछ उनको जी लेने देते हैं,
कुछ हम भी जी लेते आज,

....

इख्तियाले हुश्न

इख्तियाले हुश्न,
न ये तेरा मतला,
तेरे पैमाने की,
पैमाईश से गुज़र सका,

मशहूर होते-होते,
दिन गुज़र गए,
तेरी नज़र से,
न गुज़र सका,

....

तुम बैठी हो

तुम बैठी हो गुमसुम सी,
हाथ पर हाथ धरे,
आखों में खोई सी,
लिए कोई आस सी,

बैठे-बैठे एक दिन,
एक बात याद आ गयी,
कहने ही वाले थे,
सामने से वो निकल गयी,

निगाह उसकी तरफ बढ गयी,
दूर तक वो निकल गयी,
बात फिर रह गयी,
अन्दर-अन्दर ही कुछ कह गयी,

....

सितारों की आज़माइश

सितारों की आज़माइश,
उजाले में क्यूँ करते हो,
रौशनी चली जाने दो,
अँधेरा हो जाने दो,
बदल छंट जाने दो,
आमवश को आने दो,
तब सितारों को
चमकते देखकर,
नज़रें क्यूँ फेरते हो,

....

सगुफ्ता हुश्न को

सगुफ्ता हुश्न को,
मानने वालों ने,
जिस्म को इतनी,
तवज्जो क्यूँ दी है,

गर रूह न होती,
जिस्म में,
यूँ रौशनी न होती,
किसी हुश्न में,

....

मुसीबत जदा

मुसीबत जदा जिन्दगी में,
पल एक सुकून का मिल जाए,
मेरे निकलने से पहले,
तेरी एक झलक मिल जाए,

पलके भी न गिरें,
उस पल को रोक लूं,
तू जा भी न सके,
तुझे जी भर कर देख लूं,

....

हकीकत-ए-वक्त

हकीकत-ए-वक्त से,
कुछ वक्त निकाल लेता हूँ,
कुछ इधर से निकाल लेता हूँ,
कुछ उधर से निकाल लेता हूँ,

माजरा-ए-आलम,
वक्त गुजार कर लेता हूँ,
कुछ इधर गुज़ार लेता हूँ,
कुछ उधर गुज़ार लेता हूँ,

....

जिगर-ए-हालत

जिगर-ए-हालत तू क्या जाने,
ज़ख्मों की बात तू क्या जाने,
नासूर हूँ मैं दिल का तेरे,
रिस-रिस कर रिश्ता ही रहूँगा,

इसी से रिश्ता बनाकर रखूँगा,
तुझे इसी तरह सताता रहूँगा,
तुझे इसी तरह जताता रहूँगा,
तुझे इसी तरह याद आता रहूँगा,

....

कुछ कहते-कहते

कुछ कहते-कहते रुक-सी गयी,
आँख मिलाते-मिलाते झेंप-सी गयी,
आगे आते-आते पलट-सी गयी,
फिर न जाने क्यूँ दौड़-सी गयी,

आज तक न समझ पाया,
माजरा क्या था,
फिर कभी न मिल पाया,
काजरा क्या था,

....

सरे दरबार तुझसे

सरे दरबार तुझसे,
इल्तजा कर बैठे,
बादशाह के सामने,
तुझे मोहब्बत का,
पैगाम दे बैठे,

अब सर कलम हो,
की सूली मिले,
हम तो तुझसे,
सरे आम मोहब्बत कर बैठे,

इस शहजादियों से,
मोहब्बत,
इतनी आसान नहीं होती,

दिल तो होता है,
पर पहचान नहीं होती,
कहाँ कब बदल जाएँ,
ये किसी की नहीं होती,
खेल कर दिल से,
दिल तोडना,
इनकी जाती हसरत होती,
....

है सहाले बाज़ार में

है सहाले बाज़ार में,
वेवफा से रहते हैं,
कुछ वो खफा से रहते हैं,
कुछ हम खफा से रहते हैं,

दूरियाँ बढती गयी,
मजबूरियां बढती गयी,
जिन्दगी के सफ़र में,
मैंने इधर, वो उधर चली गयी,

....

वोह! कातिल

वोह! कातिल,
इतनी नजदीकी,
न सह पाऊंगा,

आगोश में समाँ ले मुझे,
तेरे बिना न रह पाऊंगा,

निगाह से निगाह में,
उतर जाने दे,
तुझे निगेहबान बनाऊंगा,

दिल से दिल में,
समां जाने दे,
तुझे दिलरुबा बनाऊंगा,

....

नज़रें ढूंढ रहीं हैं

नज़रें ढूंढ रहीं हैं उन्हें,
जिन्हें देखते ही दिल में,
उल्फत-सी हो जाती है,
रौशनी-सी मिल जाती है,

सामने ही आ गए हैं वो,
नज़रें न भांप पायें मेरी,
चेहरा छिपा लेती हूँ मैं,
देख ही न पायें मुझे वो,

....

कुछ खामोशियाँ

कुछ खामोशियाँ,
बदरंग-सी होने लगीं,
बातों ही बातों में,
जिन्दगी खोने लगी,

नफासत की बात,
आजमाईस-सी लगने लगी,
मोहब्बत भी अब,
तकरीबन होने लगी,

कहकहे वक्त की,
अदालत में लगने लगे,
जिन्दगी की खामोशी,
छटने लगी,

राह-ए-बगर में,
तौहीन-सी होने लगी,
न जाने ये जिन्दगी,
कहाँ खोने लगी,

....

मोहब्बत को

मोहब्बत को,
तरसती निगाहें,
इस आस में,
गुमसुम-सी बैठी हैं,

कोई तो आ जाए,
नजरों से नजर मिला जाए,
जिन्दगी को भरमा जाए,
अपना बना ले जाए,
मोहब्बत को तरसती निगाहें,

....

बार-बार

बार-बार
चेहरा उसका
आँखों के
सामने आता था
आँख बन्द करते ही
वो नजर आता था

यादों के आईने में
तस्वीर उसकी
उभरती थी
अक्स अपना देखती थी
तस्वीर उसकी
आती थी

दिन बीतते-बीतते
यादों में समाता गया
हर पल हर समय
वही याद आता गया

अब तो लगता है
जल्दी से वो कहीं
दिख जाए
उसे देख लूँ
उससे लिपट जाऊँ

सब्र अब होता नहीं
लम्हों को खोता नहीं
अकेले में रोता नहीं
काश वो उस दिन होता नहीं

आँखों में चमक
छा गई
उसके आने की
खबर जो आ गई
बस इन्तजार
आने का था
विरह का वक्त
जाने का था

....

अरमान आशिकी का

अरमान आशिकी का,
हर दिल में नजर आता है,
कोई छुपा लेता है,
कोई जता लेता है,

नादानियाँ आशिकी में,
हर उम्र की आजमाईश हैं,
दिल-ए-नजीर से,
हर किसी की फरमाईश हैं,

राफ्ता-ए-उमर का,
यूँ बेबस कर देता है,
मन तो जवान रहता है,
पर जिस्म को बूढ़ा कर देता है,

रोककर हुश्न को,
किसने रख पाया है,
जिन्दगी तमाम खो गई,
बुढ़ापा सब पर आया है,

....

वो बला कि

वो बला कि,
खूबसूरत थी,
जब उससे मेरी,
शादी हुई थी,

अब वो बला हो गई है,
अब ला, तब ला, सब ला,
करके
मेरा तबला बजाती रहती है,

बला की,
फरमाईशों के चक्कर में,
धूप से मैं,
बलैक हो गया,
मेरा भेजा भी,
लॉक हो गया,

खोजता हूँ,
उस बला को,
इस बला में,
चुपचाप मुँह,
बंद किये पड़ा रहता हूँ,

ताने-उलहाने,
न जाने क्या-क्या सुनने पड़ते हैं,
भीतर-ही-भीतर,
परम नाम गुनने पड़ते हैं,

....

राफ्ता-ए-जिन्दगी

राफ्ता-ए-जिन्दगी,
कौन किससे कहे,
सभी अपने-अपने में,
घुट-घुट के रहे,

नाजुक-सा यह वक्त है,
जमाना बड़ा सख्त है,
दरीबा-ए-जिन्दगी का,
कौन किससे कहे,

बहवशी ये अमला है,
घूमता हुआ ये गमला है,
कोई तो कुछ भी कहे,
कोई बस चुपचाप रहे,

बरगजा-ए-रहमत में,
बात अब कैसे करें,
कोई बस तन्हा रहे,
महफिल है कहीं सजे,

....

कोई तूफान

कोई तूफान,
उठते-उठते,
ठहर गया,

कोई मन्जर,
निकलते-निकलते,
रुक गया,

कोई कुछ,
कर गया,
कोई कुछ,
कर गया,

धड़कते दिल से,
अरमां निकल गया,
वो गया वो गया,

....

थोड़ी-थोड़ी दूर में

थोड़ी-थोड़ी दूर में,
कोई ईधर से,
कोई उधर से,
निकल जाता है,

कौन किधर जाता है,
कौन किधर आता है,
समझ में नहीं आता है,
कोई न किसी को समझाता है,

बड़ी भागदौड़ है,
सब ओर होड़ है,
कोई कुछ बनाना चाहता है,
कोई कुछ छिपाना चाहता है,

क्या कहें,
क्या सुनें,
कुछ समझ में न आता है,
कोई कान न लगाता है,
कोई हर बात पर दिल जलाता है,

....

आज हम हैं

आज हम हैं,
नवाजिसों से,
रूठे हुए,,
क्यों हैं,
हमारे दिल,
टूटे हुए,

रहने दे,
सहने दे,
कोई बात,
का मलाल,
न होने दे,

....

चिलचिलाती धूप में

चिलचिलाती धूप में,
तेजी-तेजी से,
बढ़ते कदम, फूलती साँसे,

तेज धड़कनें, पसीने से तरबतर,
अभी वो गुजरा, मेरे समीप से,

न जाने क्या जल्दी थी,
हेल्थ उसकी हेल्दी थी,
आज भी जब कभी आँख बन्द होती है,
उसी की तस्वीर सामने होती है,

दिन बीत गये,
जिन्दगी चलती रही,
दरवाजे पर खट-खट हुई,
पापा के साथ कोई था,

यह तुम्हारा नया ड्राईवर है,
उसकी चाल, उसका डील-डौल,
किसी की याद दिला रहा था,
पास के साथ वही चला आ रहा था

....

अभी वो कुछ

अभी वो कुछ कदम ही बड़ा था,
पता नहीं क्यों वापस बैठ गया,
हजार ख्याल मन में आ रहे थे,
दिल को समझा रहे थे,

ऐसे तो कोई,
मुलाकात न थी,
वह वहाँ बैठता था,
मैं यहाँ बैठती थी,

कुछ दिनों से उसने आँख उठाकर,
देखने की हिम्मत की थी,
पर शायद फट्टू था,
या किसी और पर लट्टू था,

थोड़ी ही देर में,
एक कागज,
उसकी तरफ उछला,
मेरा दिल मचला,

दूर कोई खड़ी थी,
वह उठा, उसके साथ,
चल दिया,

मैं चुपचाप बैठी रही,
वह वापस लौट कर आया,
माथे पर तिलक लगा था,
कलाई पर राखी बँधी थी,

हाय मैं,
कितनी गधी थी,
क्यों मायूस,
पड़ी थी,

....

है दूर की नहीं

है दूर की नहीं,
पास की बात है,
बस अभी-अभी हुई,
मुलाकात है,

क्या कहूँ गुफ्तगू-ए-आलम,
वो क्या कह गई,
बस नजरों ही नजरों में,
पैगाम-ए-मोहब्बत दे गई,

....

तन्हा-तन्हा मंजर

तन्हा-तन्हा मंजर,
आज, महफिल में नजर,
आता है,

क्यों कोई, हमसफर,
हमसाया, नजर न आता है,

दूर से कोई,
चिल्लाता है,
भागता दौड़ता आता है,
हमसे लिपट-चिपट जाता है,

भींच लेता है,
बाहों में,
रख देता है,
ओंठों पर ओंठ,

आँखे मेरी बंद हो गयीं,
मैं तो आसमान में सो गयी,
सारा जहाँ खो गया,
जन्नत का नजारा हो गया,

....

तन्हा-तन्हा

तन्हा-तन्हा,
खड़ा रहा,
महफिल में,
आपके लिए,

नजरें देखती रहीं,
चेहरा आपका लिए,

गुमसुम-सी थी एक लहर,
कुछ दोस्त खड़े आये नजर,
थोड़ा-थोड़ा चल लिया,
उनमें में घुलमिल लिया,

....

वो मुन्तजर थे

वो मुन्तजर थे
कि आशिकी,
फना हो गई,
दौर-ए-निस्तजर में,
न आईना देखते हैं,
न सजते हैं,
सँवरते हैं,
बस,
खोए रहते हैं,
भीतर की खोह में,

....

अब तो राफ्ता

अब तो राफ्ता,
हुश्न-ओ-वजाहत की किस्मत,
कि तन्हाईयाँ,
बेबसी में ले लो,

कोई अन्जुमन की खातिर,
रिसाले प्यार में खड़ा है,
जिन्दगी साहित ही सही,
वो बीच मझदार में खड़ा है,

रोककर राजी किया,
अब सिला-स-मयसर में रह,
मैं भी चुप रहूँ,
कुछ न तू उससे कह,
कुछ न उससे कह,

....

रूहों के साये

रूहों के साये,
कभी साथ नहीं छोड़ते।
अपनी मौजूदगी के,
एहसासों से खुदको जोड़ते।

रोंगटे खड़े हो जाते,
जब आस.......पास रूहों के साये होते।
जहन को झनझना जाते,
जब रूहों के साये जिस्म में समा जाते।

हो अहसास किसी की मौजूदगी का,
उसके जिस्म के जाने के बाद।
वही तो साये रूहों के,
जो किसी और को नजर नहीं आते।

रूहानियत का आलम यही है,
जिस्म के जाने के बाद भी,
अपनों का ख्याल रखती है।
रूह से रूह को पकड़े रखती है।

....

है हकीकत गर जाननी

है हकीकत गर जाननी,
तो अफसानों को सुना करो।
है गर जिन्दगी पहचाननी,
तो दीवानों को देखा करो।

है अफसानों की दुनिया,
हकीकत कहाँ से लाएँ।
सब तरफ हैं झूठों के साये,
सच की बातें कहाँ से लाएँ।

महफिलें सजी हैं,
रक्श.......ओ.......रक्श हो रहा।
कोई ईधर गा रहा,
कोई उधर रो रहा।

खो गई है चाँदनी,
सूरज भी ठंडा हो गया।
आशिकों के दीवान में,
कौन कलाम लिख गया।

....

बहुत सफर तय किया

बहुत सफर तय किया,
इन वक्त के थपेड़ों में।
कुछ चले कुछ रुके,
इन वक्त के लपेड़ों में।

न आसान थी राहें,
न मंजिल पता थी।
कदम के सायों में,
ये जिन्दगी गाफिल थी।

थी मोजा रवानियाँ कभी,
अब तो उजाड़ पिंजर.......सा पड़ा है।
न मिला सुकूँ अभी तक,
अभी भी राहों में गिरता......सा खड़ा है।

है तन्जीम मुझे,
तेरी रहबरी का आलम।
तेरे ही साथ चल रहे हैं,
सारी जिन्दगी में बालम।

....

पत्तियाँ देखो कैसे लहरा रहीं

पत्तियाँ देखो कैसे लहरा रहीं,
डालियाँ गुलों को महका रहीं,
उस तरफ से गुजरो कभी,
अहसास हो तुमको तभी,

अभी तो बस ये जिन्दगी,
धीरे.......धीरे सरका रहीं।
ख्वाबों की दुनिया से निकलो अभी,
कुदरत नजारा दिखाने बुला रही।

चले आओ, क्यों हो लेटे हुए,
न बैठो, अब गम समेटे हुए।

बहुत हो गई गम की बातें अभी,
खुशी को बस अपनाओ अभी।
दिल में कुदरत के कुछ नजारे,
अपनी धड़कने में बसाओ अभी।

चले आओ .. चले आओ ... चले
आओ ...

....

सुबह.......सुबह की ताजगी

सुबह.......सुबह की ताजगी,
जिन्दगी को महकाती है,
रोज़.......रोज़ सुबह इसी तरह से,
जोश को भर जाती है,

सारा दिन काम ही काम में,
यूँ गुज़रता है,
शाम को फिर थकान होती है,
पसरकर यूँ सोता है,

....

कुछ पल

कुछ पल,
सुकून.......ओ.......अहलत के मिल
जाएँ,
इस ज़माने से,
चुपके.......चुपके यूँ निकल जाएँ,

खबर न हो किसी को,
कभी थे इस जहान में,
न कोई तखल्लुस छोड़ें,
यूँ किसी किताब में,

....

गम तो पाल लिए

गम तो पाल लिए,
बिन पाल के नौका कैसे चले,
जिन्दगी के समन्दर में,
न जाने कब साहिल मिले,

इन्ही गम के पलों के सहारे,
अपनी जिन्दगी चलाते हैं,
पल.......पल धीरे.......धीरे से काटते,
अपनी पतवार चलाते हैं,

एक न एक दिन,
किनारा मिलेगा,
भटकती नाव को,
सहारा मिलेगा,

कुछ सुकून अब,
पल.......पल मिलेगा ,
कुछ वक्त अब,
यूँ रुका हुआ लगेगा,

....

बेरूखी

बेरूखी,
बेर के रुख की,
तुम क्या जानो,

जब बेर रहते हैं,
तब,
सब पत्थर मारते हैं,
बकरियाँ पत्तियाँ चरती हैं,

बेर.......पत्तियाँ जाते ही,
सब चले जाते हैं,
बिन पत्तियों के,
बिन बेरों के,

अपने काँटों के संग,
बेर के रुख,
खड़े नज़र आते हैं,
यही बेरुखी के,
पल कहलाते हैं,

....

हो तन्हा आलम बेबसी का

हो तन्हा आलम बेबसी का,
कुछ देर तुम निहारो,
कुछ देर मैं निहारुँ,
हो गुफ्तगू कुछ आँखों से,
कुछ दूर तुम बैठो,
कुछ दूर मैं बैठूँ,

....

अब बात आई समझ में

अब बात आई समझ में,
नज़र न लगे,
इसलिए चेहरे की,
रंग.......पुताई की जाती है।

रंगों के पीछे,
असली चेहरा बचा रहता है,
नज़र लगने का आलम,
रंगीन चेहरा सहता रहता है,

रंग धुलने के बाद,
न कोई पहचान पाता है।
न कोई सताता है,
अनजान ही रह जाता है।

रंग.......पुताई चेहरे पर हो तो,
बुरी नज़र से बची रहती है।
असलियत छिपी रहती है,
अज़मत भी बची रहती है।

....

चलो सो जाएँ घड़ी दो घड़ी

चलो सो जाएँ घड़ी दो घड़ी,
थोड़ा अब विश्राम कर लें,
आँखे बहुत थक गईं हैं,
मोबाइल को देखते देखते,

सही कहा,
दुरुस्त फरमाया,
कम्बख्त यह,
लत ही गलत है,

उँगलियों में बेचैनी होने लगी,
आँखों में धुँधलापन छाने लगा,
दिमाग में हलचल थमने लगी,
क्या कुछ नया.......नया होने लगा,

लगे रहते दिनभर मोबाइल में,
संसार जैसे खोने लगा है,
आस.......पास क्या हो रहा है,
महसूस नहीं अब होने लगा है,

....

होश माँगकर लाए थे

होश माँगकर लाए थे
घड़ी दो घड़ी का
किसी ने फिर गिलास
आगे रख दिया

आँखे तरेर कर देखा
उसकी तरफ
उसकी मुस्कान ने कर लिया
अपनी तरफ

अब क्या करें
इसे तो खाली करना पड़ेगा
माँगकर लाया होश
अब तो खाली गवाँना पड़ेगा

तनिक उनकी नजर उधर फिरी
हमने गिलास गमले में खाली करी
होश में भी नाटक मदहोशी का किये
सहारा उनका लिए उठे और चल दिये

....

हालात कुछ नसीब ने बिगाड़े

हालात कुछ नसीब ने बिगाड़े
कुछ हमने
अब तो बस बेबस से खड़े हैं
तन्हा तेरी मेहफिल में

क्या करें होश में न थे
गुरूर से भरमाए हुए।
तू तो छम छम आती थी
मेरी बहिन मिलने रोज़।

अब देखते हैं तेरी महफिल
आँखों में तेरी ऊपर की हँसी।
हमने भी दोस्तों की आड़ ली
कहीं न मिल जाए नजर तुमसे।

क्या जबाव देंगे अपने वजूद को
हम थोड़ा मुस्कुरा लेंगे दोस्तों में
छिपा लेंगे जज्बात अपने दिल के
पर खुद को न माफ कर पायेंगे कभी।

....

टिल्ला जोगियाँ दा

टिल्ला जोगियाँ दा,
पहुँचा राँझा,
कहे जोगियाँ नूँ,
मैंनू बणा दो कनफटा जोगी,

जोगी बन राँझा,
अलख जगान लग्या।
गाँव.......गाँव जंगल.......जंगल,
अलख निरंजन पुराकन लग्या।

जोगियाँ दे चिमटे नाल,
रब नूँ भजयन लग्या।
पर किस्मत दे बिच,
कुछ होर था लिख्या।

इक दिन इक द्वारे,
राँझा अलख निरंजन पुकारे।
दौड़ी.......दौड़ी आई हीर,
भिक्षा डारदी राँझे नुँ निहारे।

....

तमाशाई बनके अफसाना

तमाशाई बनके अफसाना,
वफा.......ए.......राज कहते हैं।
तुम दरीचे में तो आओ,
तुमको अपना सरताज कहते हैं।

है मोहब्बत गर,
तो अफसानों से न डरना।
मजनूँ बन गार में उतर जाना,
या रांझे ताँ जोगी बन रहना।

पता सभी को है,
बहुत सताये जाते हैं,
मोहब्बत के परवाने,
जमाने की बंदिशों में,

फिर अफसाने लिखे जाते हैं,
इनके कलम.......ए.......लहू से।
दीवानों के दीवान भरे जाते हैं,
इनके आँसु.......ए.......गम से।

सदियाँ बीत जाती हैं,
दुनियांएँ बदल जाती हैं,
पर अफसाने वही रहते हैं,
लोग सुनते.......सुनाते रहते हैं,

....

है तुनवर तेरी यादों के

है तुनवर तेरी यादों के,
रिवायत क्या बनाऊँ मैं,
मद्देनजर एक शख्स है,
उसी को क्या बुलाऊँ मैं,

है शोखियाँ तेरे वजूद की,
रंग.......ओ.......अनायत में फैली,
माजरा यह किस्से का,
तुझी को क्या सुनाऊँ मैं,

न कर मालूम जख्म मेरे,
तेरी यादों से ढक रखे हैं,
गर नज़र उसकी पड़ गई,
उसी को क्या बुलाऊँ मैं,

रहने दो काफिले,
अब सफर तन्हा ही तय करना है,
राह में न किसी से मिलना है,
मंजिल तक अकेले ही चलना है,

....

हो जुस्तजू गर

हो जुस्तजू गर,
फलक की तरफ देखो,
तारों की महफिल लगी है,
चाँद कितना तन्हा है,

बंदिशें गर हों जिन्दगी में
कदम थम जाया करते हैं,
जुबाँ खुश्क हो जाती है,
कान रुँध जाया करते हैं,

ना मामूल हो तो,
नासूर ही रहने दो,
कुछ तो सज़ा मिले,
बेवफाई की उसे,

है साहिल,
लहरों के थपेड़ों को खाता,
उसका भी क्या कसूर,
जो बेमुरव्वत चपेड़ों को खाता,

....

तुझे देखकर, दिल की

तुझे देखकर, दिल की,
धडकन, तेज हो गयी,
निगाहें, तुझ पर,
ठहर.......सी, गयीं,

मत पूँछ, हाल मेरा,
बेसुध पड़ा हूँ, बरामदे में,
मनसूबे, बना रहा हूँ,
तुझसे, मिलने के,

बहाने, ढूंड रहा हूँ,
घर से, निकलने के,
न कुछ, खाया है,
न कुछ, पिया है,

पता नहीं, अजीब.......सा,
मज़ा, मिल रहा है,
तुझसे मिलने को,
दिल जो मचल रहा है।

....

तारों की महफिल में

तारों की महफिल में,
हर चाँद तन्हा रहता है,
सहमा.......सहमा दुबका.......दुबका,
ओट में परदे की,
मंद.......मंद मुस्कुराता रहता है,

आँखे बस बोलती हैं,
राज दिल का खोलती हैं,
होंठों पर तो हया का,
परदा पड़ा रहता है,

किस तरह खामोशी पी जाती है,
यह बात सीखी जा सकती है,
दूधिया रोशनी फैल जाती है,
यह बात दीखी जा सकती है,

स्याह रात को चमकाता रहता है।

....

कुछ खामोशियाँ

कुछ खामोशियाँ,
बदरंग.......सी होने लगीं,
बातों ही बातों में,
जिन्दगी खोने लगी,

नफासत की बात,
आजमाईस.......सी लगने लगी,
मोहब्बत भी अब,
तकरीबन होने लगी,

कहकहे वक्त की,
अदालत में लगने लगे,
जिन्दगी की खामोशी,
छटने लगी,

राह.......ए.......बगर में,
तौहीन.......सी होने लगी,
न जाने ये जिन्दगी,
कहाँ खोने लगी,

....

तारीफों के आईने में

तारीफों के आईने में,
शक्ल जो देख लेते हैं।
आईने में उतारना,
इसी को समझ लेते हैं।

तारीफों के पुल,
सीधे कान तक जाते हैं।
कानों के रास्ते,
सीधे दिल में उतर जाते हैं।

असली आईने में जब,
शक्ल दिखलाई जाती है।
आईना दिखाना कहकर,
बात समझाई जाती है।

तारीफ बड़ी बेबाक चीज है,
हर किसी को पसंद आती है।
आईने में शक्ल तो,
मेकअप के बाद देखी जाती है।

....

खामोश रहो

खामोश रहो,
देखो खामोशी का मज़ा।
अपनी बातें सुनाकर,
क्यों दे किसी को सजा।

यूँ ही तो,
दिन.......रात कट जाते हैं।
कभी इसके, कभी उसके,
किस्से याद आ जाते हैं।

खामोशियाँ बहुत कुछ,
कह जाती हैं।
खामोश रहने से,
बातें पचनी शुरु हो जाती हैं।

यूँ ही बोलने का,
अब चलन रहा नहीं।
सब बेगाने हैं,
वो अपनापन रहा नहीं।

चलो खामोश रहते हैं,
किसी से कुछ न कहते हैं।
अब तो बस पन्नों को यूँ ही,
कलमों से भरते रहते हैं।

....

कुछ खत पड़े थे

कुछ खत पड़े थे,
अलमारी के रैक में।
हाथों से खोला उनको,
धीरे.......धीरे पढ़ा उनको।

यह मकान,
किराये पर लिया था अभी।
साफ.......सफाई,
कर रहा था तभी।

खतों की लिखावट,
जानी पहचानी.......सी लगी।
ऊपर नाम पढ़ा तो,
सिहरन.......सी दौड़ने लगी।

तभी पत्नी अपने साथ,
उसी को कमरे में लाई।
कहा पत्नी ने, यह अपना
कुछ सामान लेने हैं आईं।

बीस बरस में,
क्या कुछ बदल गया।
कुछ वो सहम गई,
कुछ में सहम गया।

....

ये अपनी मज़ार पर

ये अपनी मज़ार पर,
बैठकर रोता है कौन ?
यह भरी स्याह दोपहर,
सोता है कौन ?
हम तो यूँ तनहाइयों में चले आए।
शायद कोई यहाँ हमसाया मिल जाए।

....

खामोश कदम उनके भी हैं

खामोश कदम उनके भी हैं,
खामोश कदम मेरे भी हैं।
खामोशियाँ मंजर में छाईं हैं,
न किसी ने नज़र मिलाई हैं।

कदम मेरे उठ न रहे हैं,
वो भी धीरे.......धीरे चल रहे हैं।
दोनों के दिल पर बोझ है,
दोनों इसे समझ रहे हैं।

वो राह अपनी पकड़ रहे हैं,
मैं राह अपनी पकड़ रही हूँ।
उनकी मजबूरियाँ मुझे पता हैं,
मेरे मजबूरियाँ उन्हें पता हैं।

बस आखिरी मिलन को आए थे,
बुझे हुए दिलों को लाए थे।
कुछ देर खामोशी में गले लगाए थे,
दिल ही दिल में रोए थे।

....

इस शायर को कुछ

इस शायर को कुछ
और न समझ लेना,
वो खुदा की इबादत करता है, उसे
अपना न समझ लेना,

उसकी शायरी बनते-बनते बन जाती है,
इबादत गहरी होती जाती है,
शायरी खुद-ब-खुद उतरती आती है,

जज्बातों को उसने
दिल ही दिल में समेट लिया है,
बस चन्द लफ़्ज़ों में बयाँ
जज्बातों को कर दिया है,

मंजिल-ए-आखिर उसकी कहीं और है,
आपकी अदाकारी में खुदा की डोर है,

जिन्दगी के हालात से दूर, अपनी
जिन्दगी में ही रहता है,
तन्हाई में खुदा में खोया रहता है,

....

किधर से शुरू करून,
किधर से ख़तम करून,
जिन्दगी का फ़साना,
कैसे तेरी नज़र करून,
है ख्याल जिन्दगी का,
कैसे मुनव्वर करून,
मगरिब के जानिब खड़ा,
कैसे तसव्वुर करून,

--- पप्पू परिहार “बुण्देलखण्डी”